मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
दिसम्बर-८९

बसन्त पंचमी

३१-१-९०

माघ शुक्ल पंचमी को बसन्त पंचमी कहा जाता है, जो कि इस वर्ष ३१ जनवरी १९९० को आ रहा है। इस दिन बसन्त ऋतु का प्रारम्भ होता है और देवता लोग पूर्ण रूप से पृथ्वी तल पर विचरण करते हैं।

सही अर्थों में देखा जाय तो यह "सरस्वती दिवस" है, और सिद्धाश्रम ने इस दिन का विशेष महत्व स्वीकार किया है, यदि निम्न छोटा सा प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो अपने आप में यह अद्वितीय प्रयोग बन जाता है।

यदि साधक इस दिन के इस प्रयोग को सम्पन्न करता है, तो उसकी स्मरण शक्ति बढ़ जाती है और वह किसी भी परीक्षा या इन्टरव्यू में सफलता प्राप्त कर लेता है, यही नहीं अपितु इसके द्वारा उसके कण्ठ में सरस्वती साक्षात रूप से विराजमान होती है जिसकी वजह से वह जो कुछ कहता है, वह सत्य हो जाता है।

परीक्षा में सफलता, श्रेष्ठ अंक प्राप्त करने की क्रिया, इन्टरव्यू में पास होना, अधिकारी के सामने सफलता प्राप्त करना, भाषण देने की कला और बात चीत करने की चातुर्यता इस साधना के माध्यम से प्राप्त होती है।

बसन्त पंचमी के दिन साधक स्वयं स्नान कर सफेद धोती धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने बालकों को बिठा दें। फिर "सरस्वती यंत्र" को अपने सामने रख दें। तथा उस पर "ह्रीं" अक्षर लिख दें और प्रत्येक यंत्र पर अष्ट गन्ध लगा कर निम्न मंत्र की एक माला फेरे—

सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै ह्रीं नमः

फिर उस यंत्र के ऊपर से अष्ट गन्ध उंगली से ले कर बालक की जीभ पर ऊंगली से या शलाका से "ह्रीं सरस्वत्यै नमः" लिख दें और वह यंत्र किसी धागे में पिरो कर बालक के गले पहना दें, यदि साधक स्वयं के लिए प्रयोग करे तो दर्पण में देख कर अष्ट गन्ध से अपनी जीभ पर उपरोक्त मंत्र लिख कर वह यंत्र गले में धारण कर ले इस प्रकार घर के सभी बालक बालिकाओं पर यह प्रयोग सम्पन्न करे, पर प्रत्येक के लिए अलग अलग "सरस्वती यंत्र" की आवश्यकता होती है।

समय रहते यह यंत्र आप पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त कर ले, बसन्त पंचमी के पर्व पर इस प्रयोग को आजमा कर देखे, कि वास्तव में ही यह प्रयोग कितना अधिक चमत्कारिक और दिव्य है।

चमत्कार विशेषांक

जनवरी-१६६०

"चमत्कार" शब्द कोई घटिया या हल्का शब्द नहीं है, चमत्कार का मतलब है, अनोखा, आश्चर्ययुक्त, जिसे बुद्धि सही ढंग से समझ न पाये, जो पारलौकिक हो, जो हमारी बुद्धि से परे हो।

और हर क्षण, हर पल, संसार तेजी से बदल रहा है, और विज्ञान उसी तेजी के साथ उन पारलौकिक विद्याओं को जानने के लिए उतावला हो रहा है, जो कि उनके लिए भी चमत्कार है, और वे उन चमत्कारों की वास्तविकता को जानकर स्तम्भित है, चकित ह, आश्चर्ययुक्त है।

और जनवरी १६६० का विशेषांक पूर्ण प्रामाणिक, सत्य की कसौटी पर खरा उतरने वाला और चमत्कारिक घटनाओं, साधनाओं, और परिवर्तनों से भरा हुआ है।

बहुत अधिक पृष्ठ, बहुत अधिक चित्र और बहुत ही अधिक आश्चर्यजनक सामग्री से लबालब भरा यह अनूठा विशेषांक ....आपकी जिन्दगी को संवारने में सहायक, प्रामाणिक और विचित्रताओं से संपन्न।

★ ● ★

० हिमालय के चमत्कारिक योगी

सम्मेलन हो रहा है, इन चमत्कारिक योगियो का ६ अप्रेल १६६० को........और उन्होंने आमन्त्रित किये है भारत के उच्चकाटि के वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों को, संयोजक है स्वामी अरविन्द।

आप भी जान लीजिए कि क्या क्या चमत्कार दिखाने जा रहे है, ये योगी........जो बुद्धि से परे है, जहां तक विज्ञान अभी नहीं पहुंच सका है और आप भी इस सम्मेलन में जा सकते है, बिना किसी शुल्क के, और स्थान है--

जनवरी के विशेषांक में पूरा पता पढ़ लीजिए और पहुंच जाइये, इन योगियों के सम्मेलन में।

० क्या हम ब्रह्माण्ड में अकेले है ?

और उत्तर दिया है, अमेरिका के अत्यन्त प्रतिष्ठित वैज्ञानिक विद्वान हिवानोर ने............ पिछले ही दिनों मंगल ग्रह से पूर्ण पुरुष धरती पर उतरा है, और हो रहे है, उस पर परीक्षण, और वैज्ञानिक आश्चर्य चकित है उस मंगल ग्रह के निवासी के कद, बुद्धि और प्रतिभा पर ....पूर्ण जानकारी तथा मगल ग्रह के निवासी के चित्र सहित चमत्कारिक विवरण ।

० विश्व का राजनैतिक भविष्य

अगले ग्यारह वर्षों के बाद यह शताब्दी समाप्त होने वाली है और २१ वीं शताब्दी का प्रारम्भ होने वाला है, पर इन ग्यारह वर्षों में पूरा संसार उथल पुथल से भरा हुआ है. आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, ज्योतिषियों और सिद्धों का, विश्वास नहीं होता कि ऐसा ऐसी घटनाएं भी घटेंगी, इस दुनियां में ।

और आप भी संसार की इन हलचलों, इन आश्चर्यजनक सन्धियों परिवर्तनों और युद्धों से परिचित हो जाइये इस लेख के द्वारा । एक भविष्यकाल न प्रामाणिक दस्तावेज..........पत्रिका के जनवरी विशेषांक में ।

० मृत्यु के उस पार

क्या होता है मृत्यु के बाद............ इसका कोई प्रामाणिक उत्तर नहीं था, स्वर्ग और नरक तो केवल कल्पना थी, पर अब इसका प्रामाणिक समाधान मिला है, कि मरने के बाद प्राणी कहां कहां से गुजर कर किस प्रकार से अगला गर्भ चुनता हैं, और किस युक्ति से पहिचान सकते हैं, कि हमारे मृत संबधी ने कहां और किस गर्भ को चुना है जान सकते है, आप यह सब । एक प्रामाणिक साधना के द्वारा वैज्ञानिक रहस्यों से सम्पन्न, प्रामाणिक और पूर्ण विवरण के साथ ।

० वासुकी : जो भविष्य वक्ता है

है न आश्चर्य की बात ! पर सिक्किम की राजधानी गंगटोक में ऐसा ही वासुकी सर्प है, जो प्रत्येक शुक्रवार को एक निश्चित समय पर प्रगट होता है, और उस समय भीड़ जुट जाती है, हजारों लाखों की, भारतीयों और विदेशियों की ।

और उससे प्रश्न पूछा जाता है, और वह उत्तर देता है, अपनी फूत्कार से । चाहे वह प्रश्न भूतकाल हो या भविष्य काल का ......पूरे चित्र और प्रमाण के साथ, साथ ही विदेशी वैज्ञानिकों के प्रामाणिक मत भी ।

० वह हवा में उड़ता रहा

आपको आश्चर्य लग रहा है और विश्वास नहीं हो रहा है मेरे कथन पर . ....पश्चिम में अब यह एक सामान्य बात हो गई है, वह भी भारतीय साधना के सुधरे हुए रूप के द्वारा । कोई कठिन नहीं रहा है, हवा में ऊपर उठना, उड़ना और अपने गन्तव्य स्थल तक पहुंच जाना ।

पहली बार विशिष्ट चित्रों के साथ " प्रामाणिक साधना विवरण के साथ, यह आलेख आपकी जानकारी के लिए आपके·······प्रयोग के लिए।

० जो मृत्यु से लौट कर आये

एक नहीं दो नहीं पचास से भी ज्यादा उन व्यक्तियों के विवरण·······जो डाक्टरी भाषा में मर गये थे, उन्हें श्मशान तक ले जाया गया, और लिटा दिया गया चिता पर·······पर फिर वे जीवित हो उठे आलस्य मरोड़ कर······· ।

उनके अनुभव, उनके ही शब्दों में, कि मृत्यु के बाद उस समय तक उन्होंने क्या क्या अनुभव किये, प्रामाणिक विवरण के साथ।

० स्वप्न : जो जीवन बनाते है

स्वप्न में हमारा मन अनन्त ब्रह्माण्ड में विचरण करता है, पर उस पर हमारा नियंत्रण नहीं होता, पर अब ऐसा संभव हो सका है।

अब इस साधना के द्वारा मन पर नियंत्रण पाया जा सकता है, और स्वप्न से उन सारे जटिल प्रश्नों के उत्तर जाने जा सकते है, जिनसे हम परेशान हैं, जिनको हम सुलझा नहीं सकते है, एक अद्वितीय साधना रहस्य।

० ये करोड़ पति भूत

जी हां, अब भूत कोई अजीब चीज नहीं रहे, भय उत्पन्न करने वाले नहीं रहे, अब हम इन करोड़ पति भूतों के मित्र बन सकते है और उनसे प्राप्त कर सकते है, वह सब कुछ, जो हमारे लिए दुर्लभ है।

पश्चिम में तो अब यह सहज संभव हो गया है पर इस साधना के द्वारा आप भी इन करोड़ पति भूतों से संबंध स्थापित कर सकते है, मित्रता गांठ सकते है, और उनसे बहुत कुछ प्राप्त कर सकते है, इस साधना विधि के द्वारा।

० जिसके सामने सुन्दरता भी पानी भरती है

एक जड़ी बूंटी जिसका परिचय अभी अभी लगा है, विश्व के वैज्ञानिकों को, और उन्होंने इसके परीक्षण किये है, कुरूप स्त्रियों पर, और परिणाम प्राप्त हुए है, अद्वितीय आश्चर्यजनक।

इस एक जड़ी बूंटी से कायाकल्प हो जाता है, पूरे शरीर का, और यह जड़ी बूंटी आपके आस पास ही उगती है, कोई दुर्लभ नहीं है, यह जड़ी बूंटी, यह अलग बात है कि हमें ज्ञान नहीं है, इसका।

और हम परिचय करा रहे है, इसी जड़ी बूंटी का·······पूर्ण प्रामाणिक विवरणों के साथ; उपयोग के साथ और विदेशी चिकित्सकों के प्रमाण एवं कथनों के साथ।

० पांच सौ वर्षों के बाद भी वे जीवित है

क्यों आश्चर्य हो रहा है, आपको, पर इसमें आश्चर्य की तो कोई बात ही नहीं है, इसका आधार है, तिब्बतियों की लामा साधना, जो पहली बार प्रकाश में आ रही है, इस पत्रिका के माध्यम से।

चित्रों के साथ और पूर्ण प्रामाणिक विवरणों के साथ……आप स्वयं भी इन लोगों से मिल सकते है और स्वयं यह प्रयोग……यह साधना सम्पन्न कर सकते है, अपने स्वयं के लिए।

० वे चमत्कार : जो आप दिखा सकते है लोगों को

इस अंक में हम दे रहे है, वे छोटी छोटी छोटी साधनाएं, जो लोगों की नजरों में चमत्कार है, और आप स्वयं पहली बार में इन साधनाओं में सफलता पा कर लोगों को चमत्कार दिखा सकते है।

एक अद्वितीय लेख, एक प्रामाणिक आलेख, पत्रिका के इन पन्नों पर आपके लिए।

० प्रेत विद्या

अब समय आ गया है, कि इस विद्या को आप सीख सकते है, और सम्पन्न कर सकते है, दुर्लभ और अद्वितीय कार्य।

पश्चिम में इसके माध्यम से कठिन और असभव कार्य संभव होने लगे है. आप भी इस विद्या से रू बरू हो सकते है, पत्रिका के इन पन्नों के द्वारा।

० स्वर्ण सिद्धि

चेलेन्ज है, इन पंक्तियों के माध्यम से……जो यह सिद्ध कर दे, कि तांबे से सोना नहीं बनाया जा सकता, यह चुनौती दी है, कीमियागर भारतीय योगी इरोव ने।

और वह हजारों लाखों की भीड़ के सामने सिद्ध करने जा रहा है, इस प्रयोग को। उसी के द्वारा लिखा गया प्रामाणिक लेख दे रहे है पत्रिका के इन पन्नों पर, जनवरी के विशेषांक, में पूर्ण प्रामाणिकता के साथ……"आप भी तांबे से सोना बना सकते है"।

★ ● ★

और भी ढ़ेर सारे लेख है, इस चमत्कार विशेषांक में, जो कि हमनें प्रकाशित कर दिया है, सज धज के साथ, और आतुर है, आपके हाथों में आने के लिए।

पूरे ग्यारह अंकों और इस विशेषांक के साथ पत्रिका के पूरे वर्ष का शुल्क है मात्र १०५) रु.। इस हाथ पत्रिका शुल्क भेजिये और हाथों हाथ भेज रहे है वार्षिक विशेषांक आपके हाथों में……और फिर पूरी निष्ठा के साथ भेजेंगे, अगले ग्यारह अंक प्रत्येक महीने।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी, जोधपुर (राज०)

वर्ष-९

अंक-१२

दिसम्बर-१९८९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

* * * * * * * * * * * *

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

प्रार्थना

स्वर्णवता पर मदं भय दु.ख नाशं
दारिद्रय नश्य पर मिदं परिपूर्ण रूपं ।

हे देवी । हे स्वर्ण रेखा ।। आप मुझ पर कृपा करे, मेरे दुःख भय और दरिद्रता का नाश करें, मुझे पूर्णता दे, मैं आपकी शरण में हूं।

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग
हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

दुःख दारिद्रय और भय को समूल मिटाने में सहायक

स्वर्ण रेखा साधना प्रयोग

जीवन में तीन प्रबल शत्रु है, जो पूरे जीवन को बरबाद करने मे सहायक है, इनमें १) दुःख, २) दरिद्रता, और ३) भय जैसी बाधाएं है। यदि ये तीनों ही न हो तो जीवन पूर्ण रूप से सुख सौभाग्यमय बन सकता है।

अगर हकीकत में देखे तो हमारा पूरा जीवन भय ग्रस्त रहता है, कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय, कहीं कोई राज्य बाधा न आ जाय कोई अचानक विपत्ती न जाय, किसी बालक की अकाल मृत्यु न हो जांय आदि सामाजिक पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तर के कई प्रकार के भय है, जिनसे यह जीवन बराबर आक्रांत बना रहता है।

दूसरी समस्या दरिद्रता है, घर में पांच पचीस हजार होने से ही सम्पन्नता नही आ पाती, आजकल तो लड़की के विवाह में लाख दो लाख खर्च हो जाना मामूली बात हो गई है। हम चाहे कितना ही परिश्रम करें परन्तु जो सम्पन्नता आनी चाहिए वह आ नही पाती, हम अपने पूरे जीवन से जितनी ही अधिक दरिद्रता को समाप्त करने का प्रयास करतेहै, उतनी ही परेशानियां बढ़ती जाती है, और दरिद्रता हमारा पिण्ड नहीं छोड़ती।

और हमारा तीसरा प्रबल शत्रु है, दुःख। हम जीवन भर किसी न किसी वजह से दुःखी बने रहते है, कोई न कोई समस्या, कोई न कोई अड़चन कोई न कोई कठिनाई आती ही रहती है, कभी शारीरिक रोग हो जाता है तो कभी घर में बीमारी समाप्त ही नहीं होती, तो कभी बच्चों की शिक्षा सही ढंग से नहीं हो पाती, तो कभी घर में लड़की बड़ी हो जाती है और उसका विवाह नहीं हो पाता, इस प्रकार पूरे जीवन भर कोई न कोई दुख बना ही रहता है।

और इन तीनों ही बाधाओं से छुटकारा पाना सहज संभव नहीं है, हम जितना ही ज्यादा समस्याओं से मुक्ति चाहते है, उतनी ही ज्यादा अड़चनें और परेशानियां जीवन में आती ही रहती है।

मेरे पिताजी पूरे जीवन भर इन तीनों परेशानियों से झूझते रहे, जिन्दगी के अंतिम दिनों में उनकी भेंट एक साधु से हो गई थी, जो कई दिनों से श्मशान में आकर टिका था, मेरे पिताजी नित्य उसको खाना पहुंचाने जाते और घटे दो घटे उनके साथ व्यतीत करते, उनकी सेवा करते, यों भी पिताजी को साधुओं की सेवा करने में आनन्द आता था।

मेरे पिताजी की सेवाओं से प्रसन्न हो कर जाते जाते साधु ने मेरे पिताजी को दरिद्रता, दुःख और भय से पूर्णतः मुक्ति देने के लिए चमत्कारिक प्रयोग दिया था, और पिताजी ने वह प्रयोग घर पर आकर किया, जिसे "स्वर्ण रेखा प्रयोग" कहा जाता है।

उसके बाद पिताजी तीस वर्षों तक और जीवित रहें, पूरे सुख आनन्द और मस्ती, के साथ जीवन में धन की

कोई कमी नहीं रही, उन्हें तत्कालीन महाराजा ने राज दरबार में बुला कर अपने हाथों से सम्मान प्रदान किया था। वास्तव में ही उनके जीवन का शेष भाग और हमारे आज तक का जीवन अत्यन्त आनन्द सौभाग्य सुख और सम्पन्नता के साथ व्यतीत हो रहा है, इन सब का मूल कारण यह 'स्वर्ण रेखा अप्सरा साधना प्रयोग' ही है।

स्वर्ण रेखा साधना प्रयोग

यह अपने आप में अनूठा प्रयोग है, जिसे मैं समस्त पत्रिका के भाई बहिनों के लिए पूर्ण विधि के साथ स्पष्ट कर रहा हूँ।

किसी भी शुक्रवार की शाम को साधक जो इस प्रयोग को करना चाहे, वह पानी का लोटा भर कर किसी मजार पर या किसी की कब्र पर चला जाय, कब्र प्रत्येक गांव या शहर में होती ही है। वह चाहे समाधि हो, चाहे दरवेश हो, चाहे दरगा हो। उस पर एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा हरे रंग का कपड़ा चढ़ा दें। साथ ही साथ हीने के इत्र की शीशी साथ में ले जाय और वह कब्र पर छिड़क दें, यदि संभव हो, तो वह लौटे का जल आस पास छिड़क दें।

उसके बाद घर आवे और स्नान कर के पूजा स्थान में बैठ जाय, तथा एक थाली में कुंकुम से निम्न यत्र बनावे।

स्वर्ण रेखा यन्त्र

००	० ० ०	००
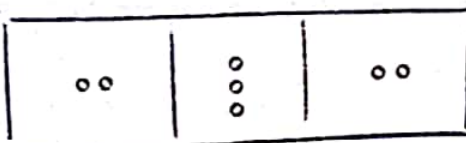
फिर उस यंत्र पर "स्वर्ण रेखा तावीज" को रखे, यह तावीज चमत्कारिक होता है जो कि पहले से ही तैयार किया हुआ हो, और इसके सामने ही एक हकीक का नग रख दे।

और फिर वहीं पर बैठे बैठे हकीक माला से निम्न मंत्र की इक्यावन माला मंत्र जप करते समय तेल का दीपक लगा रहना चाहिए।

स्वर्ण रेखा मंत्र

॥ ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ॥

मंत्र जप समाप्ति के बाद वह तावीज गले में पहिन ले और हकीक नग को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। जिस माला से मंत्र जप किया था, वह माला और यंत्र तीसरे दिन अर्थात् रविवार की शाम को उस मजार पर जा कर चढ़ा दें।

ऐसा करने पर यह चमत्कारिक साधना पूरी होती है और उसी दिन से घर में चमत्कार होने लगते है। साधक इसके एक महीने के भीतर भीतर जो कुछ अनुभव करेंगे, वह आश्चर्यजनक और अदभुत होगा, उनके जीवन में दुःख दरिद्रता और भय की समाप्ति होगी ही, जीवन में निरन्तर हर दृष्टि से उन्नति होती ही रहेगी। इस प्रयोग को साल में एक बार कर ले तो और ज्यादा अच्छा रहता है।

पत्रिका पाठकों और साधकों के लिए एक सुविधा प्रदान की जाती है, कि वे इस पत्रिका के अंतिम पन्नों में प्रकाशित प्रपत्र को भर कर पत्रिका का एक सदस्य बना कर मुफ्त में 'स्वर्ण रेखा यंत्र' और 'हकीक नग' प्राप्त कर सकते है, इसके लिए किसी प्रकार की धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है पर यह गारण्टी है कि यह अपने आपमें अद्भुत आश्चर्यजनक प्रयोग है. आप स्वयं एक बार आजमा कर देखिए, तब आपको भरोसा होगा, कि यह स्वर्ण रेखा प्रयोग किस प्रकार से खुशहाली और आश्चर्यजनक परि-परिवर्तन लाता है।

★

यदि जरूरी हो तो

इस प्रपत्र को भर कर हमें भेजिये

यह दिसम्बर का अंक है और इस अंक से १९८९ का वर्ष समाप्त हो रहा है, अगला जनवरी का विशेषांक "चमत्कार विशेषांक" होगा, जिसकी रूपरेखा इसी पत्रिका में पढ़ेंगे।

इस पूरे वर्ष में यदि आपने कोई धनराशि भेजी हो और उससे सबंधित सामग्री किसी कारणवश न मिली हो, या आपके किसी प्रश्न का जवाब प्राप्त न हुआ हो, अथवा पत्रिका का कोई अंक मार्ग में गुम हो गया हो और आपको नहीं मिला हो तो आप हमें इस प्रपत्र को भर कर भेज दें अथवा इसकी प्रतिलिपि अलग कागज पर अंकित कर भेज दे, हम तुरन्त संबंधित सामग्री या पत्रिका का अंक आपको सर्वथा मुफ्त में भेजने की व्यवस्था करेंगे।

क्योंकि आप हमारे आत्मीय है, और आपसे पत्रिका का अत्यन्त गहरा संबंध हो गया है। न पत्रिका के बिना आप रह पाते है, और न आप से मिले बिना हमें सतुष्टि होती है।

१– मैंने.................. तारीख को निम्न प्रकार से.............................. रुपये भेजे थे, (कृपया सूचित करें कि यह धनराशि मनीआर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट या किस प्रकार से भेजी थी) इसके बदले में मैंने निम्न सामग्री चाही थी, जो कि अभी तक मुझे प्राप्त नहीं हुई है, कृपया वह सामग्री भिजवा दें।
यहां पर आप सामग्री का पूर्णता के साथ उल्लेख करे, और यदि संभव हो तो मनीआर्डर की रसीद लगा दे जिससे कि जांच कर आपसे संबंधित सामग्री भेजी जा सके।

२– मुझे इस वर्ष पत्रिका के .... अंक प्राप्त नहीं हुए, कृपया ये अंक सर्वथा मुफ्त में भेजने की व्यवस्था करे, जिससे कि इस वर्ष की पत्रिका की पूरी फाइल तैयार हो सके।

३– मैंने संबंधित जानकारी, भविष्यफल, या सूचना चाही थी, (यह विवरण अलग कागज पर लिख कर इस प्रपत्र के साथ लगा दें) कृपया यह जानकारी लौटती डाक से भेजने की कृपा करे।
आप हमारे आत्मीय है, और आपको संतुष्टि प्रदान करना हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य है।

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी
जोधपुर

- यदि आप जीवन में पूर्ण सफलता चाहते हैं
- यदि आप पूर्ण पौरूषवान और पुरूष बनना चाहते हैं,
- यदि आप किसी भी प्रकार के नशे से छुटकारा चाहते हैं,
- यदि आप संसार की अद्वितीय सुन्दरी बनना चाहती हैं,
- यदि आप बुढ़ापे में भी रोग रहित प्रबल पुरुष बनना चाहते हैं

तो

मातंगी सिद्धि साधना सम्पन्न करें

दस महाविद्याओं में मातंगी को सर्वाधिक प्रमुखता दी गई है, क्योंकि यह केवल साधना ही नहीं है, अपितु सही अर्थों में पूरे जीवन का कायाकल्प है, इसीलिए सिद्धाश्रम के योगियों ने वर्ष का एक दिन इस अद्वितीय साधना के लिए समर्पित किया है, इसीलिए सिद्धाश्रम के योगियों ने स्वीकार किया है, कि यदि साधक सब काम छोड़ कर केवल इस दिन का उपयोग कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती।

जिन साधकों ने तांत्रोक्त मातंगी साधना संपन्न की है, उन्होंने विचित्र अनुभव प्राप्त किये है, योगीराज दिव्यानन्दजी ने स्वीकार किया है, कि दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ साधना मातंगी साधना ही है, कुमारी रूपावेला ७० वर्ष की उम्र में भी अपने आपको पूर्ण क्षमतावान अनुभव करती रही क्योंकि उसने प्रारम्भ में ही दीक्षा लेते समय मातंगी दीक्षा ही प्राप्त की थी। योगीराज अरविन्द इस बात को स्वीकार करते है, कि मातंगी साधना के द्वारा हम जीवन की सारी कमियों को दूर कर जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकते है, वह सब हम अपने अनुभव में ला सकते है, जो कुछ हमारे जीवन में न्यूनता है।

जिन साधकों ने और योगियों ने मातंगी साधना संपन्न की है, उन्हें कई प्रकार के लाभ हुए है, और यदि उन लाभों की गणना की जाय तो एक बहुत बड़ा पोथा तैयार हो जायेगा। विश्वामित्र संहिता में मातंगी साधना

के १०८ लाभ स्पष्ट किये है, आज के युग में भी जिन लोगों ने मातंगी साधना सम्पन्न की है, और उन्हें जो लाभ हुए है, वे निम्न प्रकार से है।

यदि आप काया कल्प चाहते है तो

तंत्र रूप से सम्पूर्ण जीवन का काया कल्प मातंगी साधना के द्वारा ही संभव है। हमारे जीवन में कई प्रकार की न्यूनताएं हो सकती है, हमारा कद छोटा हो या हम बहुत अधिक दुबले पतले हो, अथवा जरूरत से ज्यादा मोटे हो गये हो, या हमारा चेहरा सुन्दर नहीं हो अथवा शरीर में पौरूषता का प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा हो तो ऐसी स्थिति में एक मात्र मातंगी साधना ही इन सारी समस्याओं को दूर कर जीवन में पूर्णता दे सकती है। इस साधना को सम्पन्न करने पर एक प्रकार से सारे शरीर का काया कल्प सा हो जाता है।

यदि आप व्यसन से मुक्ति चाहते है तो—

हो सकता है, आपको शराब की लत पड़ गई हो और चाहते हुए भी उस लत से अपने आपको मुक्त नहीं कर पा रहे हो, आपका सारा जीवन और शरीर खोखला हो रहा हो अथवा सिगरेट पीने की आदत पड़ी हुई हो और सिगरेट आपका पिण्ड नहीं छोड़ रही हो, अथवा आप नींद की गोलियां लिये बिना भली प्रकार से सो नहीं पा रहे हो, अथवा आपको जुआ खेलने की आदत हो, और आप उस आदत से चाहते हुए भी छुटकारा नहीं पा रहे हो, तो इसके लिए यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिससे कि आप इन दुर्गुणों से बच सकते है, जिससे कि आप इन समस्याओं से मुक्ति पा सकते है, जिससे कि आप अपने शरीर को खोखला बनाने से बच सकते है।

और कोई दवा या औषधि जीवन में नहीं है जो कि कि इन व्यसनों से मुक्ति दिला सके, इसके लिए तो यहीं एक मात्र उपाय है, जिसके द्वारा आप पूर्णतः व्यसन मुक्त हो कर नये सिरे से अपने जीवन को सफलता और उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते है।

यदि आप पूर्ण पुरूष बनना चाहते है, तो

हो सकता है बचपन की गलत संगति और बुरी आदतों की वजह से आपको यौवन रोग हो गया हो, अथवा आप पूर्ण रूप से कामवासना में संतुष्टि अनुभव नहीं कर रहे हो, अथवा आप हीन भावना से ग्रस्त हो, अथवा पौरूषता की दृष्टि से किसी प्रकार की न्यूनता अनुभव कर रहे हो, अथवा कोई ऐसा रोग हो गया हो जिसे आप प्रगट नहीं कर सकते तो इसके लिए नीम हकीम के पास जाने से या कामोत्तेजक दवाइयां लेने से कुछ भी नहीं होगा, डाक्टरों के पास जाने से इस समस्या का समाधान नहीं है, जब आप आयु की वजह से या रोग की वजह से स्त्री को सतुष्ट नहीं कर पायेंगे, तो अवश्य ही आपका जीवन बेस्वाद, बेमानी और हीन भावना से ग्रस्त हो जायेगा।

और निश्चय ही इस समस्या का समाधान मातंगी साधना ही है, यदि एक बार आप मातंगी साधना संपन्न कर लेते है, तो निश्चय ही इन समस्याओं से आप मुक्ति पा सकेंगे और जीवन का वास्तविक आनन्द अनुभव कर सकेंगे, पूर्ण पौरूषवान बन कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे, जीवन का आनन्द ले सकेंगे, और एक प्रकार से अपने आपमें सक्षमता अनुभव कर सकेंगे।

यदि आप सौन्दर्यमयी बनना चाहती है तो-

यह नहीं हैं, कि यह साधना केवल पुरूषों के लिए ही है अपितु यदि स्त्री साधिका इस साधना को संपन्न करती है, तो वह भी ऊपर लिखे हुए लाभ प्राप्त कर सकती है, एक प्रकार से काया कल्प कर अपने सिर के ऊपर सफेद होते हुए बालों को पुनः काला बना सकती है, चेहरे की झुर्रियां मिटा सकती है, शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला सकती है, और अपने थुल थुल शरीर से छुटकारा पा कर दुबली पतली सुन्दर आकर्षक बन सकती है।

इस साधना के द्वारा शरीर स्थित सभी रोग तो

समाप्त होते ही है और साथ ही साथ इसके द्वारा शरीर मे एक विशेष प्रकार का चुम्बकीय आकर्षण आ जाता है, सारा शरीर एक निश्चित अनुपात में ढल जाता है, आंखों में तीखापन और चेहरे पर गुलाबी रंगत आ जाती है, इस साधना के बाद यदि आप अपने आपको दर्पण में देखती है, तो सहसा विश्वास नहीं होगा कि आप वही स्त्री है, जो काली, मोटी, बेडौल और सफेद बालों वाली दयनीय थी।

स्त्रियों के लिए यह सौभाग्यदायक साधना है, जब वह अपने शरीर की समस्त कमियों का दूर कर जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकती है. वास्तव में ही यह साधना आप लोगों के लिए सौभाग्यदायक है।

सिद्धाश्रम ने प्रत्येक वर्ष माघ कृष्ण तृतीया को 'मातंगी सिद्धि दिवस' माना है, जो कि अंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष १८-१-९० को सम्पन्न हो रही है। इस दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, यदि स्त्री और पुरूष दोनों चाहे तो यह साधना सम्पन्न कर सकते है, यहां तक कि घर के प्रत्येक सदस्य को यह साधना सम्पन्न करनी, चाहिए क्योंकि जो इस साधना को संपन्न करता है, वही अनुकूलता प्राप्त कर पाता है।

साधना प्रयोग

देखा जाय तो इतनी महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना होते हुए भी यह अत्यन्त सरल और सुगम साधना है, इस साधना को कम पढ़ा लिखा व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, सौभाग्यवती या विधवा स्त्री यह साधना कर सकती है, वृद्ध या बालक रोगी या जवान कोई भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। वास्तव में ही यदि सिद्धाश्रम के योगियों ने संसार के स्त्री पुरुषों की न्यूनताओं अभावों को अनुभव कर यह दिवस मातंगी साधना के लिए रखा है, तो उन्हें चाहिए कि वे इस दिन का पूरा पूरा उपयोग करे।

साधक प्रातः काल उठकर स्नान कर यदि संध्या वंदन आदि का ज्ञान हो तो संध्या करे, स्त्री साधिका हो तो स्नान कर बालों को खुला पीठ पर छोड़ दें, और फिर अपने स्थान में आसन पर बैठ जाय।

इसके बाद सामने गुरु और गुरू माता का चित्र सामने रखे, उन्हें भगवान शिव और पार्वती मानते हुए, उनकी भली प्रकार से पूजा करे, और प्रार्थना करे, कि हमें या मुझे मातंगी साधना में सफलता प्रदान करे, इसके बाद साधक गुरू मंत्र की पांच माला मंत्र जप करे।

मातंगी महायंत्र

इस साधना का आधार मातंगी हमायंत्र है, "शाक्त प्रमोद" में मातंगी यंत्र के बारे में स्पष्ट करते हुए लिखा है–

प्रणवंच ततो कूँमायांबीजच कूर्चकम् ।।
मातंगी गयुता चास्त्रं वन्हिजायावधिर्म्मुनः ।।

अर्थात् यह यंत्र अपने आपमें विशेष तरीके से संपन्न होना चाहिए यह तांत्रोक्त मातंगी साधना है, इसीलिए इसका अंकन पूर्ण प्रामाणिकता के साथ होना आवश्यक है।

जब यंत्र का भली प्रकार से अंकन हो जाय तब प्रणव मुद्रा से उसे सिद्ध करना चाहिए, "मायाबीज" से सम्पुटित करना चाहिए, "कामबीज" से पूर्णता देनी चाहिए और "मनु बीज" से साधक के लिए पूर्ण रूप से सहायक बनाना चाहिए।

उपरोक्त श्लोक का यही अर्थ हैं, और इतनी सब क्रियाएं करने पर ही यह यंत्र पूर्ण से सिद्ध होता है जो कि साधक के लिए सभी दृष्टियों से उपयोगी होता है, ऐसे यंत्र का उपयोग ही करना चाहिये।

परन्तु एक यंत्र से केवल एक साधक ही साधना संपन्न

कर सकता है, यदि पति और पत्नी दोनों साधना संपन्न करना चाहते है तो इन दोनों को अलग अलग यंत्र प्राप्त करने चाहिए। साधक कहीं से भी इस प्रकार का महायंत्र सिद्ध करवा कर प्राप्त कर सकता है, अथवा पत्रिका कार्यालय से संबंध स्थापित कर इस प्रकार का महायंत्र समय रहते प्राप्त कर सकता है।

फिर सामने लकड़ी के एक बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर इस महायंत्र को पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और इसकी संक्षिप्त पूजा करे, संक्षिप्त पूजा में जल, कुंकुम, अक्षत पुष्प और नैवेद्य-समर्पण है।

इसके बाद साधक सामने दीपक लगाये, जो शुद्ध घृत का हो, और यह दीपक उसी स्थान पर चौबीस घण्टे अखण्ड रूप से जलते रहना चाहिए।

इस महायंत्र की पूजा करने के बाद साधक "मातंगी माला" से ही मंत्र जप सम्पन्न करे, इसमें अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग नहीं किया जा सकता, विविध मनको से युक्त और विविध प्रणवों से सम्पुटित मातंगी माला का ही प्रयोग किया जाता है, जो कि अपने आपमें अद्वितीय होती है और जिसका प्रत्येक मनका पूर्ण रूप से मंत्र सिद्ध होता है।

फिर आसन पर बैठ कर उपरोक्त माला से ग्यारह माला मंत्र जप करे।

मातंगी महामंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वा हा

इस प्रकार इस मंत्र की ग्यारह माला मन्त्र जप करे, और माला को यंत्र के ऊपर पहिना दें, इसके बाद इसी दिन रात्रि को साधक या साधिका पुनः इसी यंत्र के सामने ग्यारह माला मंत्र जप करे, तब यह साधना पूर्ण मानी जाती है। विश्वामित्र संहिता में बताया गया है, कि इसके बाद साधक नित्य उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप करे और पूरे एक महीने तक करे, उसमें यह आवश्यक नहीं है कि अपने घर में ही यह मंत्र जप करे, वह यदि यात्रा में है या किसी अन्य स्थान पर है तो यंत्र को साथ में रखने की आवश्यकता नहीं है केवल मातंगी माला अपने साथ में रखे और जब भी समय मिले स्नान करके या हाथ पैर धो कर शुद्ध वस्त्र धारण कर इस माला का मंत्र जाप कर ले।

जब एक महीना पूरा हो जाय तब घर में किसी कुंवारी कन्या को बुला कर उसे भोजन करावे और किसी पात्र में छोटी छोटी लकड़ियां जला कर उपरोक्त मंत्र की १०८ आहुतियां दे दे, फिर कुंवारी कन्या का पूजन करे और उसे यथोचित वस्त्र, द्रव्य आदि भेंट स्वरूप दे।

इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती हैं और साधक इस एक महीने के भीतर भीतर अनुकूल फल प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, आवश्यकता है इसके प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना और मंत्र जप की।

साबर साधनाओं का मसीहा

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का व्यक्तित्व अपने आप में अप्रतिम, अद्भुत और अनिवर्चनीय रहा है, उनमें हिमालय सी ऊंचाई है तो सागरवत् गहराई भी साधना के प्रति वे पूर्णतः समर्पित व्यक्तित्व हैं तो जीवन के प्रति उन्मुक्त, सरल और सहृदय भी वेद, कर्मकाण्ड और शास्त्रों के प्रति उनका अगाध और विस्तृत ज्ञान है मन्त्रों और तन्त्रों के बारे में पूर्णतः जानकारी भी, यह एक पहला ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें प्रत्येक प्रकार की साधनाएं समाहित है, उच्च कोटि की वैदिक और दैविक साधनाओं में जहां यह व्यक्तित्व अग्रणी है वहीं औघड़, श्मशान और साबर साधनाओं में भी अपने आप में अन्यतम है, ऊंचे से ऊंचा विद्वान भी उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करता है तो सामान्य गृहस्थ व्यक्ति भी अपनी समस्याओं का समाधान पाकर राहत अनुभव करता है, कुछ योगी किसी एक क्षेत्र में ही निष्णात और सिद्ध होते हैं, संसार में शायद बहुत ही कम बिरले व्यक्तित्व होंगे जिनमें इतने विचित्र विरोधाभासों और विविध साधनाओं का समन्वय स्वरूप होगा, स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी का व्यक्तित्व ऐसा ही अनिंद्य अनिवर्चनीय और अप्रतिम व्यक्तित्व है।

जिनके कण्ठ में साक्षात् सरस्वती है

मैंने उन्हें हजारों लाखों की भीड़ में प्रवचन देते हुए सुना हैं, उनका मानस अपने आप में संतुलित है, किसी भी विषय पर नपे तुले शब्दों में अजस्त्र अबाध गति से बोलते ही रहते है, लीक से एक इंच भी इधर उधर नहीं हटते, मूल विषय पर विविध विषयों की गहराई उनके सूक्ष्म विवेचन और साधना सिद्धियों को समाहित करते हुए वे विषय को पूर्णता के साथ इस प्रकार प्रस्तुत करते है कि सामान्य मनुष्य भी सुनकर समझ लेता है और मन्त्र मुग्ध बना रहता है, उनका मस्तिष्क पूर्णतः सन्तुलित है; यदि उनका मानस इस तथ्य पर स्पष्ट होता है कि एक घण्टा बोलना है तो ठीक घण्टे बाद अपने विषय का पूर्णता के साथ समापन कर लेते है, उन्हें संसार की महत्वपूर्ण साधनाओं का जितना सटीक, पूर्ण और उच्चत्तम ज्ञान है वह अपने आप में अन्यतम है. उनका साहचर्य पाकर ऐसा लगता है कि मानो हम किसी तलैया में स्नान नहीं कर रहे है अपितु समुद्र में अवगाहन करते हुए विविध रत्नों से अपने आपको सम्पूरित कर रहे है।

एक अकेला व्यक्तित्व, जो संसार की समस्त साधना शक्तियों को समेटे हुए है

लाखों-करोड़ों का मार्गदर्शन

मैं उनके सन्यास और गृहस्थ दोनों ही जीवन का साक्षी रहा हूं, हजारों सन्यासियों की भीड़ में भी उन्हें बोलते हुए सुना है, उच्च स्तरीय विद्वतापूर्ण शुद्ध संस्कृत में अजस्र, अबाध रूप से, और गृहस्थ जीवन में भी उन्हें सरल हिन्दी में बोलते हुए सुना है, विषय को अत्यधिक सरल ढंग से समझाते हुए बीच बीच में हास्य का पुट देते हुए मनोविनोद के साथ अपनी बात वे श्रोताओं के गले में उतारना चाहते है, भली प्रकार से उतार लेते है, सन्यासी जीवन में भी मैंने उनके साथ हजारों शिष्यों की भीड़ गतिशील होते हुए देखी है और आश्चर्यचकित रहा हूं कि एक व्यक्तित्व इतने सारे शिष्यों को किस प्रकार से सम्भाल लेता है, अलग - अलग साधनाएं, इच्छाएं और अलग अलग चिन्तन के इस समूह को भी वे सही ढंग से मार्गदर्शन करते रहते है, सभी सुखी है, सभी सन्तुष्ट है, आज उनके सन्यासी शिष्यों में से कुछ शिष्य तो इतनी ऊंचाई पर पहुंच गये है कि विश्व उन्हें सूर्यवत मानने लगा है, सिद्धाश्रम में भी उनके बहुत संख्या में शिष्य है और वे आज भी उनका नाम स्मरण कर अपने आपको रोमांचित और गौरवान्वित अनुभव करते है।

परकाया प्रवेश साधना

स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी उन दिनों साधना की ऊंचाइयों पर थे, उनके विशाल वक्ष स्थल और सिंह के समान चाल से हम सब गर्वित थे, हम सभी महाबलेश्वरं में समुद्र के किनारे बैठे हुए थे और चर्चा परकाया प्रवेश की हो गई, हमने कहा शंकराचार्य के समय में यह विद्या अवश्य जीवित रही होगी पर अब तो लुप्त है तो उन्होंने कहा विद्याएं लुप्त नहीं होती और उसी समय अनायास समुद्र की लहरों से उठती गिरती लाश किनारे पर आती हुई देखी, स्वामी जी ने चैतन्य देव को कहा कि इसे किनारे पर ले आये, हम चार पांच शिष्यों ने उस मृत देह को किनारे पर लाये, स्वामी जी उस दिन मूड में थे उन्होंने शून्य में से व्याघ्र चर्म प्राप्त किया और उस पर बैठ गये, उनके कमल वत् नेत्र बन्द हो गये और होठों से कुछ मन्त्र स्फुट होने लगा, कुछ ही क्षणों में हमने देखा कि उनका शरीर निश्चेष्ट हो गया है और उस मुर्दा शरीर में हलचल होने लगी है, कुछ ही क्षणों में वह मृत शरीर अपने पांवों पर उठ कर खड़ा हो गया।

स्वामी जी लगभग आठ घण्टे तक उस देह में बने रहे और फिर सायंकाल पुनः अपने शरीर में आकर प्रामाणिकता के साथ सिद्ध कर दिया कि यह आश्चर्यजनक विद्या आज भी जीवित है।

इसके बाद तो स्वामी के आठ दस शिष्यों ने इस साधना में पूर्णता भी प्राप्त की और आज वे सभी सिद्धाश्रम में स्थित हैं।

वास्तव में ही उस दिन निखिलेश्वरानन्द जी ने जो कुछ दिखाया उससे भारतीय साधनाओं के प्रति हम सभी शिष्यों का मस्तक गर्व दीप्त हो उठा।

-योगी महेश्वरानन्द
भैरव घाट, (गंगोत्री)

हिमालयवत् विराट् व्यक्तित्व

दूसरी तरफ गृहस्थ जीवन में भी उनके शिष्यों को मैंने देखा है, उनके जन्म दिन "समर्पण दिवस" के अवसर पर भी उनके विराट व्यक्तित्व को पहिचानने की कोशिश की है, और मैंने देखा है कि वे उन गृहस्थ शिष्यों के जीवन की छोटी से छोटी समस्याएं सुलझाने में लगे हुए है, विविध समस्याओं से जूझते हुए भी उनके चेहरे पर किसी प्रकार का तनाव नहीं है, किसी प्रकार की वेदना या दुःख की रेखा तक नहीं है, सहज सरल भाव से उनसे बात करते है. उनकी तकलीफों को दूर करते है, गृहस्थ जीवन और साधना जीवन में उनका बराबर मार्गदर्शन करते रहते है, वास्तव में ही ऐसे अनिवर्चनीय गुरू का शिष्य होना भी अपने आप में गौरव मय है।

साधनाओं का मसीहा

साधनाओं के तो वे महारथी है ही, संसार की शायद ही कोई ऐसी साधना पद्धति रही होगी जिनको उन्होंने आत्मसात न किया हो, उन सभी साधनाओं को भली प्रकार से समझा है पहिचाना है अनुभव किया है और सफलता प्राप्त करने पर ही दूसरों को समझाया है, परन्तु साबर साधनाओं के तो वे मसीहा ही हैं, उन्होंने गुरू गोरखनाथ के स्तर पर खड़े होकर उनके चिन्तन को समझा है, गुरू गोरखनाथ और अन्य योगियों की साधनाओं की न्यूनताओं को दूर किया है, उनका परिमार्जन कर उन साधना विधियों को खोज निकाला है जो अभी तक अपने आप में अगम्य रही है, इस दृष्टि से उन साधकों और योगियों से भी ऊंचाई पर पहुंच गये है, जहां पर सभी साधक और योगी अपने आपको "बौना" अनुभव करते हैं।

हादी विद्या

टिहरी गढ़वाल का एक प्रमुख शहर है. जहां पर स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी की शिष्या उर्मिला बहन रहती है, आज वह लगभग ७० वर्ष की हो गई है पर पिछले चालीस वर्षों से उसने न अन्न लिया है और न जल ग्रहण किया है, स्वामी जी ने ही दीक्षा के समय उसे हादी विद्या की दीक्षा दी थी।

मैं स्वयं इनका शिष्य रहा हूं और उत्तर काशी में स्थित "प्रत्यंग आश्रम" में छः लाख सन्यासी शिष्य इसके गवाह हैं, कोई भी आकर इस बारे में जांच कर सकता है।

पूज्य स्वामी जी ने हादी विद्या की दीक्षाएं भी दी है, सन्यासियों को भी और गृहस्थ व्यक्तियों को भी, इसमें कई कई वर्षों से न तो मल मूत्र विर्जन की आवश्यकता रही है और न उन्हें भूख प्यास ही व्याप्त हुई है।

वास्तव में ही यह विद्या साधना के क्षेत्र में और सफलता के लिये अद्वितीय है, शांभवी दीक्षा के बाद ही 'हादी' दीक्षा दी जा सकती है और इसके माध्यम से व्यक्ति जीवन भर बिना अन्न जल के स्वस्थ और तरोताजा बना रहता है।

-स्वामी निरंजनदेव.
पूर्णानन्द आश्रम (टिहरी-गढ़वाल)

सागर से भी गहरा व्यक्तित्व

मुझे इनका शिष्य बनने का सौभाग्य मिला है और
मैं इसमें अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता हूं उनके
साथ काफी समय तक मुझे रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ
है, मैंने उनके अथक परिश्रम को देखा है, प्रातः जल्दी
चार बजे से रात्रि को बारह बजे तक निरन्तर कार्य
करते हुए भी उनके शरीर में थकावट का चिन्ह ढूंढने
पर भी अनुभव नहीं होता, वे उतने ही तरोताजा और
आनन्द पूर्ण स्थितियों में बने रहते है, उनसे बात करते
हुए ऐसा लगता है कि जैसे हम प्रचण्ड ग्रीष्म की गर्मी से
निकलकर वट वृक्ष की शीतल छाया मे आ गये हों,
उनकी बातचीत से मन को शान्ति मिलती है, जैसे कि
पुरवाई बह रही हो और सारे शरीर को पुलक से भर
गई हो, साबर साधनाओं में भी मुझे उनसे बहुत कुछ
सीखने का अवसर मिला है, जिसने भी उनको देखा है
उन्होंने एक बार अवश्य अनुभव किया होगा कि वे सही
अर्थों में शिव स्वरूप औघड़ दानी है, ज्ञान की प्रत्येक
स्थिति को दोनों हाथों से लुटाने में सदैव तत्पर और
अग्रणी है, किसी भी प्रकार की साधना विधि और गोप-
नीय रहस्यों को उजागर करने में उन्हें कोई हिचक
अनुभव नहीं होती, उनके जीवन में कृपणता नहीं हैं,
उनका तो मानना है कि समुद्र जैसे अगाध ज्ञान भण्डार
में से कोई लेगा भी तो दो चार छः बाल्टी ही ले पायेगा
इससे उस समुद्र के स्तर में कितना और क्या अन्तर आ
जायेगा ?

मंत्रसृष्टा योगी

यह हमारे देश का सौभाग्य है कि हमारे यहां उच्च
कोटि के योगी और सन्यासी उत्पन्न हुए, वशिष्ठ, विश्वा-
मित्र, अत्रि, कणाद, पुलस्त्य, गौतम, भारद्वाज, जैसे
ऋषियों ने साधना का दैविक विधियों को ढूंढ निकाला
तो गुरू गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ जैसे साधकों ने तन्त्र
की उस विद्या को प्रस्तुत किया जो सरल, सहज और
सुबोध है, शंकराचार्य ने साधनाओं को समन्वय करने की

कादी विद्या

यह एक लुप्त विद्या है परन्तु स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी इसके सिद्ध हस्त योगी हैं। बद्रीनाथ में स्वामी रामेश्वरानन्द जी आज भी जीवित है, जिन्होंने उनसे कई वर्ष पहले दीक्षा ली थी, सर्दियों के दिनों में जब बद्री–नाथ मन्दिर के तट बन्द हो जाते है और सभी लोग नीचे उतर आते है तब भी स्वामी रामेश्वरानन्द जी अपनी गुफा में ही रहते है और भयंकर सर्दी में तथा वर्फ के तूफान और अंधड़ में भी वे अविचलित रूप से साधना करते रहते है।

मैंने स्वयं इस साधना को पूज्य गुरूदेव से प्राप्त किया था, और पैंतीस वर्षों में सर्दी-गर्मी वर्षा का रंच मात्र ही प्रभाव मेरे शरीर पर व्याप्त नहीं हुआ हैं, इस साधना से किसी प्रकार का रोग भी व्याप्त नहीं होता।

उनकी आज्ञा से मैंने दो तीन शिष्यों को यह साधना सम्पन्न करवाई है और इसमें भी उन्हें सफलता मिली है, वास्तव में ही पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी का व्यक्तित्व अनिवर्चनीय है जिसके प्रकाश में हम शिष्य निर्भीक भाव से गतिशील हैं।

–चैतन्य भैरवी
बद्रीनाथ मंदिर के पास, बद्रीनाथ (उ०प्र०)

चेष्टा की तो धनवन्तरी जैसे ऋषियों ने आयुर्वेद की विशिष्ट स्थितियों को प्रस्फुटित किया, नागार्जुन, प्रभृति विद्वानों ने जहां रसायन शास्त्र को पूर्णता देने का साहस किया, वहीं दिव्यानन्द, अवधूतानन्द जैसे योगियों ने साबर साधनाओं को निश्चित ऊंचाई पर पहुंचाने का प्रयास किया, वह युग अपने आप में एक दिव्य युग था, जबकि साधना पद्धतियां और विविध साधनाएं ऊंचाई की ओर अग्रसर थी, परन्तु आगे चलकर यह क्रम टूट गया, बीच में अन्तराल आ गया, एक बहुत बड़ा अन्धकार युग आ गया जिससे कि भारतीय उस ज्ञान विज्ञान से छिटक गये, शास्त्रों से कट गये, उच्चकोटि के ग्रन्थ या तो विदेशों में चले गये या धर्मांध शासकों ने जलाकर खाक कर दिये ऐसे अंधकार के क्षणों में पूर्ण सूर्य की तरह स्वामी निखिलेश्वरानन्द का प्रस्फुटन हुआ जिन्होने उस खोई हुई सम्पदा को पुनः भारतीयों को देने का अथक प्रयास किया, उनके अदभुत व्यक्तित्व के बल पर वह खोई हुई निधि पुनः प्राप्त हो सकी, उस लुप्त साहित्य से पुनः आस्था कायम हो सकी, और एक बार पुनः इस धरती पर साधना का घोष सुनाई देने लगा, पुनः अन्धकार छंटने लगा पुनः प्रकाश की किरणें पृथ्वी पर अवतरित हुई, पुनः उन साधनाओं को समझने और सीखने की ललक लोगों में जगी, और वे साधना पथ पर अग्रसर हुए।

सिद्धाश्रम का आधार है यह व्यक्तित्व

सिद्धाश्रम संसार का गौरव स्थल है, एक ऐसा पावन पवित्र दिव्य भूखण्ड, जो कि अपने आप में अद्वितीय और अन्यतम है, जहां उच्चकोटि के योगी विद्यमान हैं, और साधना की जिन ऊंचाइयों पर वे पहुंचे हुए हैं, उनकी कोई क्षमता और तुलना हो ही नहीं सकती, प्रत्येक प्रकार की साधना और सिद्धियों का वह आधार रहा है, आज भी वहां सैकड़ों वर्षों की आयु प्राप्त योगी विचरण करते हुए दिखाई दे जाते हैं, सारा वातावरण सौरभमय दिव्य, मनोहर है, जहां की माटी चन्दन की तरह ललाट पर लगाने योग्य है, जहां बारहों महीने विविध तरहके पुष्प अपने पूर्ण यौवन के साथ खिले रहते हैं, जहां की हवा में एक मस्ती पवित्रता और गुनगुनाहट है जहां की 'सिद्ध योगा झील' प्रकृति का अदम्य वरदान है, जिसमें स्नान करने से एक ऐसे सुख की प्राप्ति होती है, जिसका वर्णन शब्दों के माध्यम से सम्भव ही नहीं है, उस झील में स्नान करने से स्वतः समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, काया पवित्र और दिव्य बन जाती है, शरीर की वृद्धता समाप्त हो जाती है, और पूरा शरीर एक विशेष आभा और यौवन से दीप्त सुगन्धमय और सौरभमय बन जाता है, अलग-अलग पर्ण कुटियों में जहां योगी ध्यानस्थ हैं, कहीं चिन्तन हो रहा है, तो कहीं कुछ समूह शास्त्रार्थ में व्यस्त है, कुछ साधक और योगी नवीन साधना पद्धतियों को ढूंढने में संलग्न है, तो कहीं यज्ञ धूम से वातावरण सुरभित है, सिद्ध झील के किनारे कुछ साधक किलोलें कर रहे हैं, मस्ती से उछल रहे है, आनन्द के साथ स्नान करते हुए तैर रहे हैं, तो कहीं किसी योगी की पीठ हिरणी अपनी करुणापूरित आंखों से टुकर-टुकर ताक रही है, सारा वातावरण अपने आप में अद्वितीय अनिर्वचनीय स्वप्नवत् अलौकिक हैं, जहां जाकर व्यक्ति अपने आप में खो जाता है, जीवन के रहस्यों को प्राप्त कर लेता है, और जरा मरण से भय मुक्त होकर उन असीम सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है, जो अपने आप में अद्वितीय है।

सिद्धाश्रम का आधार : निखिलेश्वरानंद

ऐसे ही अद्वितीय वेदों में वर्णित सिद्धाश्रम के संचालक स्वामी सच्चिदानन्द जी के प्रमुख शिष्य योगीराज निखिलेश्वरानन्द हैं, जिन पर सिद्धाश्रम का अधिकतर भार है, वे चाहे सन्यासी जीवन में हों और चाहे, गृहस्थ जीवन में रात्रि को निरन्तर नित्य सूक्ष्म शरीर से सिद्धाश्रम जाते हैं, वहां की संचालन व्यवस्था पर बराबर दृष्टि रखते हैं, यदि किसी साधक योगी या सन्यासी की कोई साधना विषयक समस्या होती है, तो उसका समाधान करते है, और उस दिव्य आश्रम को क्षण-क्षण में

नवीन बनाये रखते हुए गतिशील बनाये रखते है वास्तव मे ही आज सिद्धाश्रम का जो स्वरूप है, उसका बहुत कुछ श्रेय स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी को है, जिनके प्रयासों से ही वह आश्रम अपने आप में गतिशील हो सका, प्राणमय और जीवन्त हो सका, तथा साधना की ऊष्मा से सुगन्धमय सुरभित और सम्मोहक हो सका, इस वजह से वे अन्य सभी योगियों और ऋषियों से बहुत ऊंचे उठ गये हैं, ऐसे प्रातः स्मरणीय निखिलेश्वरानन्द जी का स्मरण ही पूरे शरीर को पवित्र और दिव्य बना देने में समर्थ है।

आयुर्वेद को जिन्होंने जीवन्त किया

आयुर्वेद के क्षेत्र में भी इन्होंने उन प्राचीन जड़ी बूटियों, पौधों और वृक्षों को ढूंढ निकाला है, जो कि अपने आप में लुप्त हो गये थे, वैदिक और पौराणिक काल मे उन वनस्पतियों का नाम विविध ग्रन्थो में अलग है, परन्तु आज के युग में वे नाम प्रचलित नहीं है, अधिकांश जड़ी–बूटियां काल के प्रवाह में लुप्त सी हो गई थी धीरे-धीरे अन्धकार में डूबती जा रही थी ऐसे ही समय में स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का आविर्भाव हुआ

मदालसा विद्या

वास्तव में ही वे शिष्य सौभाग्यशाली कहे जा सकते हैं, जिन्होंने पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी से दीक्षा ली या उनका शिष्य बनने का गौरव प्राप्त किया है।

मदालसा विद्या भारत की लुप्त विद्या है, और स्वामी निखिलेश्वरानन्द के अलावा केवल एक और योगी हैं, जिन्हें इसका ज्ञान है, वे भी स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य हैं, पिछले दिनों देहरादून के आगे भैरव पहाड़ी पर योगियों के सम्मेलन में गुरुदेव की आज्ञा से सेलंग बाबा ने इस विद्या को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया था।

इस साधना के बाद व्यक्ति चाहे तो अपने शरीर को बीस, तीस या चालीस फीट लम्बा चौड़ा आकार दे सकता है या अपने शरीर को मच्छर का आकार दे कर अति सूक्ष्म रूप धारण कर सकता है, लंका विजय से पूर्व हनुमानजी ने भी इस साधना के बल पर ही विस्तृत और सूक्ष्म रूप धारण किया था।

मेरी दीक्षा के समय केदारनाथ की वासुकी झील के पास स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने इस साधना को समझाते हुए अपने शरीर को ७५ फीट लम्बा तथा १८ फीट चौड़ा बना कर यह बता दिया था और कुछ ही मिनटों के बाद उन्होंने भ्रमर का आकार ग्रहण कर यह समझाया था कि साधना के बल पर शरीर की ये दोनों ही स्थितियां सम्भव हैं, मैं ही नहीं अपितु उसमें मेरे अलावा गुरु भाई सेलंग बाबा, स्वामी पूर्णानन्द, योगी महेशानन्द, बहन चिन्तपूर्णा और धन्वी योगिनी आदि कई उपस्थित थे।

आज भी उन दिनों का स्मरण कर शरीर का रोम रोम उनके चरणों में बिखर जाता हैं।

–स्वामी कैवल्यानन्द,
निखिलेश्वरानन्द शिला,
पो. वासुकी केदारनाथ (उ.प्र.)

जिन्होंने साधनाओं के बल पर उन वनस्पतियों के पौराणिक नाम और आधुनिक नाम ढूंढ निकाले, उनके गुण दोषों का विवेचन किया और उन स्थलों का पता लगाया जहां पर वे जड़ी बूटियां थी, अपने फार्म में उसी प्रकार का वातावरण देते हुए उन जड़ी बूटियों को पुनः लगाने, विकसित करने और प्राप्त करने का प्रयास किया, मील से भी ज्यादा लम्बा चौड़ा ऐसा फार्म आज विश्व का अनूठा स्थल है, जहां पर ऐसी दुर्लभ जड़ी-बूटियों को सफलता के साथ उगाने में 'सफलता प्राप्त की है, उनके अथक प्रयासों से ही वे वनस्पतियां जीवित रह सकी है, जिनके माध्यम से असाध्य से असाध्य रोग दूर किये जा सकते हैं, उनके गुण दोषों का विवेचन उनसे लाभ, उनका सेवन, उनका प्रयोग और उनसे सम्बन्धित जितनी सूक्ष्म जानकारी स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी को है, वह अपने आप में अन्यतम है, आश्चर्य होता है, कि एक ही व्यक्ति में इतने गुण है, उनके अथक प्रयासों से ही आज आयुर्वेद अपनी पूर्ण क्षमता के साथ जीवित रह सका हैं, और ससार की अलग-अलग चिकित्सा विधियों के बीच अपना सिर उंचा किये हुए खड़ा है।

रसायन विज्ञान को जिन्होंने जीवन दिया

परन्तु आगे चलकर यह ज्ञान लुप्त हो गया, आने वाली पीढ़ियां इतनी कायर और कमजोर निकली कि उस ज्ञान को सम्भाल कर नहीं रख सकी, इससे सम्बन्धित अधिकांश ग्रन्थ जल कर खाक हो गये और एक समय तो ऐसा आ गया कि यह विद्या ही भारतवर्ष से लुप्त हो गई, परन्तु ईश्वर का विधान अपने आप में अन्यतम रहता है, स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के रूप में उन्होंने ऐसे ही व्यक्तित्व का आविर्भाव किया जिनके अथक प्रयासों से यह खोया हुआ ज्ञान भारतवासियों को पुनः प्राप्त हो सका, पारद के सोलह संस्कार हो नहीं अपितु चौवन संस्कार कर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि इस क्षेत्र में उन्हें जो ज्ञान और ऊंचाइयां हासिल है, वह अपने आप में अन्यतम है, एक धातु से दुसरे धातु में रूपान्तरित करने की विधियां उन्होंने खोज निकाली और सफलतापूर्वक अपार जन समूह के सामने ऐसा करके उन्होंने दिखा दिया कि रसायन क्षेत्र में हम आज भी विश्व में अद्वितीय है, उनके कई शिष्यों ने उनके सान्निध्य में रसायनज्ञान प्राप्त किया है, और ताम्बे से स्वर्ण बनाकर इस विद्या को महत्ता और गौरव प्रदान किया हैं, वास्तव में ही ऐसे व्यक्तित्व के बल पर ही यह गौरवमय ज्ञान पुनः अन्धेरी गुफाओं से निकल कर प्रकाश में अपनी ऊंचाई पर पहुँच सका है।

साबर साधनाओं का अन्यतम योगी

साबर साधनाएं जीवन की सरल, सहज और महत्व-पूर्ण साधनाएं है, ये ऐसी साधनाएं है, जिनमें जटिल विधि विधान नहीं है, जिनमें लम्बा चौड़ा विस्तार नहीं है, जिनमें संस्कृत के सूक्ष्म श्लोक नहीं है, अपितु सरल भाषा में सफलता की श्रेणियां है, इस क्षेत्र में भी उन्होंने उन विद्याओं को ढूंढ निकाला है, जो अपने आप में लुप्त हो गई थी संसार की आठ विद्याएं ऐसी है, जो कई हजार वर्ष पहले अपनी पूर्ण ऊंचाई पर स्थित थी, परन्तु आज ये विद्याएं लगभग लुप्त है, और शायद ही उनके बारे में योगियों को जानकारी होगी, सिद्धाश्रम में अवश्य इनके बारे में निरन्तर शोध ही रही है, और उन चिन्तनों तथा साधना विधियों को ढूंढ निकाला गया है जिसकी वजह से ये विद्याएं जीवित है। स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का व्यक्तित्व अपने आप में इस क्षेत्र में पूर्णत्व लिए हुए है, जिसमें इन सभी विद्याओं की पूर्ण प्रामाणिकता के साथ जानकारी है, और अपने शिष्यों को भी जिन्होंने दक्ष किया है, वास्तव में ही इस समय विश्व में स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी एक मात्र ऐसे व्यक्तित्व है जिन्हें इन विद्याओं की पूर्ण प्रामाणिक जानकारी है।

जो साधनाएं भारतवर्ष से लुप्त हो गई

ये लुप्त साधना-विद्याएं निम्न हैं, जिनका ज्ञान संभवतः स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के अलावा एक दो सिद्धाश्रम के योगियों को ही होगा या शायद नहीं भी।

१- परकाया प्रवेश विद्या

इसमें साधक अपने शरीर को छोड़कर दूसरे किसी मृत देह में जाकर उसे जीवित कर देता है, और जब तक चाहे उस दूसरी देह में बना रहता है, और जब चाहे वह पुनः अपने मूल शरीर में आ जाता है।

२- हादी विद्या

इस विद्या के द्वारा जीवन भर न तो भूख प्यास लगती है, और न मलमूत्र विसर्जन की क्रिया ही सम्पन्न करनी पड़ती है, इतना होने पर भी उसके शरीर में किसी प्रकार की क्षीणता या कमजोरी नहीं आती।

३- कादी विद्या

इससे साधक के शरीर पर सर्दी गर्मी वर्षा तूफान अंधड़ आदि का प्रभाव व्याप्त नहीं होता, वह सर्दी में भी बर्फ में उसी प्रकार मस्ती से विचरण करता रहता है, जिस प्रकार भयंकर सर्दी में अग्नि के बीच।

४- मदालसा विद्या

इस साधना के द्वारा व्यक्ति अपने शरीर के आकार को सौ गुना लम्बा चौड़ा बना सकता है, और चाहे तो अपने शरीर को मच्छर का आकार देकर कहीं पर भी विचरण कर सकता है।

५- वायुगमन सिद्धि

इस सिद्धि के बल पर व्यक्ति का शरीर हवा से हल्का हो जाता है और वह कुछ ही सेकण्डों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाता है, इस पूरी प्रक्रिया में उसको कुछ सैकण्ड लगते है।

६-कनक धारा सिद्धि

इस साधना के बल पर साधक जब चाहे कहीं पर भी स्वर्ण वर्षा करा सकता है, जिस प्रकार वर्षा में पानी की बूंदे गिरती है, उसी प्रकार से सोने के टुकडे गिरने लग जाते है, शंकराचार्य ने ऐसा ही प्रयोग सिद्ध करके दिखाया था।

७- सूर्य विज्ञान

इस विज्ञान के माध्यम से एक पदार्थ को किसी भी दूसरे पदार्थ में रूपान्तरित कुछ ही सैकण्डों में किया जा सकता है।

८- मृत संजीवनी विद्या

यह महत्वपूर्ण साधना विधि है और इसके द्वारा मृत शरीर में प्राणों का पुनः संचार किया जा सकता है, यह कपोल कल्पित तथ्य नहीं है, अपितु आज के युग में उतना ही सत्य और प्रामाणिक है, जितना शंकराचार्य के समय में था।

शत शत वन्दन करते है हम उन्हें

स्वामी परमहंस निखिलेश्वरानन्द जी को मैंने निकट से समझने का प्रयास किया है और अपनी आंखों से इस समस्त साधनाओं को सम्पन्न करते हुए देखा है, एक बार नहीं, कई कई बार मैंने देखा है परखा है, सीखा है और समझा है। वास्तव में इस विश्व में वे ही एक मात्र ऐसे व्यक्तित्व है जो उपरोक्त विद्याओं से संबंधित दैविक साधनाओं में निष्णात है, उनसे मुझे इस संबंध में जो कुछ प्राप्त हुआ है, वह मेरे जीवन की निधि है और यह हमारे देश का और देशवासियों का सौभाग्य है कि ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व हमारे बीच है, हम उन्हें शत शत वन्दन करते है, नमन करते है और उनके प्रति श्रद्धानत है।

—योगी निर्मलदेव

सौन्दर्य लहरी : कुछ सरस पद

" सौन्दर्य लहरी " मां भुवनेश्वरी का प्रिय स्तोत्र है, काव्य की दृष्टि से इसका कोई जोड़ नहीं, शिव स्वरूप भगवत्पाद शङ्कराचार्य के मुख से काव्य की ऐसी सरस धारा प्रवाहित हुई है, कि जिसे पढ़ कर आज भी भक्त गण इस में अवगाहन करते हुए अनुभव करते हैं।

पूरा काव्य ही सर्वोत्तम है, सरस कण्ठ से इसका पाठ किया जाय तो पढ़ने वाला और सुनने वाला दोनों भावविभोर हो जाते हैं, एक-एक पद मोती की तरह जड़ा है, भगवान शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए जगन्माता पार्वती की स्तुति इन पदों में ग्रथित है।

गोंडल (गुजरात) में तो भुवनेश्वरी का साक्षात पीठ है, जहां से यह अनुपम ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है, पाठकों को इस अद्भुत अनिवर्चनीय काव्य-सरिता में आप्लावित करने हेतु कुछ पद नीचे के पृष्ठों में वर्णित है....आप स्वयं तन्मयता के साथ पढ़ कर तो देखिये न....

शिव: शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्त: प्रभवितु
न चेदेवं देवो न खलु कुशल: स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरञ्च्यादिभिरपि
प्रणन्तु स्तोतु वा कथमकृतपुण्य: प्रभवति ।।

हे भगवति, भगवान शिव सदाशिव शंकर ऐसे शक्ति रूप है क्योंकि आप उनसे संयुक्त है। अर्थात् जब आप शंकर की सहायता करती है तभी वे जगत् की उत्पत्ति, पालन तथा विनाश करने में समर्थ होते है। यदि शंकर को आपकी सहायता प्राप्त न हो तो वे आंख तक हिलाने डुलाने हेतु शक्तिमान नहीं हो सकते। इस कारण ब्रह्मा, विष्णु शंकर, इन्द्र आदि देवता जिनकी आराधना करते हैं, ऐसी आप देवी को मेरे जैसा पुण्य विहीन अथवा अल्प पुण्य वाला पुरुष प्रणाम करने या आपकी स्तुति करने में भी किस प्रकार समर्थ हो सकता है ?

तनीयांसं पांसुं तव चरणपंकेरुहभवं
विरञ्चि: संचिन्वन् विरचयति लोकानविकलम्।
वहत्येनं शौरि: कथमपि सहस्रेण शिरसा
शिव: संक्षुभ्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम्।

हे मां, ब्रह्मा आपके चरण-कमल की थोड़ी-सी रज के प्रताप से पृथ्वी, पाताल, स्वर्ग आदि लोकों की रचना करते हैं, उत्पन्न करते है। अनन्त शेष आपकी रज लगाकर जगत की रक्षा कर सकते है, धारण करते है, और रुद्र आपके चरण-कमल की रज के प्रभाव से जगत का संहार कर उसकी भस्म अपने शरीर पर मलते है।

त्वदन्य: पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया।

भयात् त्रातुं दातुं फलमपि च वांच्छासमधिकम्
शरण्या लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥

हे मां, आपके अतिरिक्त अन्य सभी देवता अपने भक्तों को दो हाथों से अथवा शब्दों द्वारा अभयदान देते है, पर आप ही एक ऐसी है कि स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल के देव, गंधर्व मनुष्य आदि लोग जो आपकी शरण में आते है, आपका स्मरण करते है, उन सभी की मनोकामना पूर्ण करती है, अर्थात् उन सभी के द्वारा आपका स्मरण करते ही तत्काल उनकी आशा सफल होती है। भक्तों को वर-दान अथवा अभयदान देने के लिये आपको प्रकट नहीं होना पड़ता, अथवा उस प्रकार का आडम्बर नहीं रचना पड़ता जिससे यह प्रतीत हो कि आप कल्याण करती है, जबकि देवता लोग तो अपनी आराधना करने वालों का अथवा अपना तप करने वालों का व्यक्तिरूप से ही कल्याण करते है, भक्तों को तव भय-संकट से मुक्त करने के लिए या कि मनोकामना से अधिक फल देने में आपके चरण ही समर्थ है।

क्वणत्कांचीदामा करिकलभकुम्भस्तनभरा
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना।
धनुर्बाणान्पाश सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहो पुरुषिका ॥

सुन्दर ध्वनि करती, झनझनाती हुई, घुंघरुओं वाली कमर में बांधने की जिसकी करधनी है, ऐसी आप बाल-गज के कुम्भ स्थल के समान स्तनो के भार से झुकी हुई ऐसी आप, मध्य में जिसके कटि का भाग पतला है ऐसी आप, शरद् पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान जिसका मुख है ऐसी आप, धनुष, बाण, पाश, अंकुश चारों आयुध चार हाथों में धारण करने वाली प्रचंड पराक्रमी महादेव की पत्नी हे भगवती ! आप सदैव हमारे सम्मुख रहें, जिससे हमारी विजय होती रहे।

दृशा दाघीयस्या दरदलितनीलाम्बुजरुचा
दवीयासं दीन स्नपय कृपया मामपि शिवे।
अनेनायं धन्यो भवति च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥

हे शिवे, हे मां, मैं आपका भक्त हूं, तथा शारीरिक, दैविक, आध्यात्मिक ताप से तपित हूं, अर्थात् संसार के विविध सन्तापों से घिरा हुआ, राग, द्वेष क्लेश भय, उद्वेग आदि से विह्वल हो गया हूं, अतः अपने इस भक्त को भी अर्धविकसित नीलकमल के पुष्पों की पंखुड़ियों के समान कान्तिवाली तथा समस्त संसार में फैली हुई ऐसी अपनी दयालु दृष्टि से स्नान कराए।

हे मां, आपकी दृष्टि मेरे ऊपर डालने से आपका कुछ बिगड़ता नहीं। जैसे चन्द्रमा अपनी किरणों को कुटियों तथा महलों में बिना किसी भेदभाव के फैलता है, उससे उसका कुछ बिगड़ता नहीं, अतः आप मुझ पर दृष्टि डालें जिसके फलस्वरूप मैं संसार के समस्त कष्टों से मुक्त हो सकूं।

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुण नीतिनिपुणे
निराघातज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये।
नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतिपदे
निरातंके नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम् ॥

हे निधि की भण्डाररूप, हे सदैव मन्दहासवाली, हे अपार, अनन्त गुणवाली, राजनीति, सदाचार तथा शुद्ध चरित्रवाली एवं अन्य नीतियों में निपुण, कुशल ऐसी, हे अखण्ड, हे नियमानुसार रहने वाली, हे चित्त में ही वास करने वाली, हे पापरहित-निष्पाप, भोले स्वभाव की, हे भक्तों के पापों को दूर करने वाली, हे चारों वेदों के अंग-रूप वेदान्त तथा उपनिषद द्वारा स्तुति किये जाने वाली वेद-वेदान्त उपनिषद स्वरूप वाली एवं स्तुतियों की आधार रूप हे मां, मेरी इस स्तुति को स्वीकार करें।

॥ श्री ॥

श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग

श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग भारतीय मन्त्र शास्त्र का श्रेष्ठतम और गोपनीय प्रयोग है, जो यद्यपि लघु दिखाई देता है, पर उसका प्रभाव तुरन्त अचूक और अद्वितीय है।

यों तो गणपति से सम्बन्धित सैकड़ों साधनाएं भारतीय तंत्र-मंत्रों में वर्णित है, पर यह साधना अन्यतम है, जब भी, जिसने भी इस प्रयोग को किया है, पूर्ण और निश्चित सफलता मिली है।

प्रसिद्ध दण्डी स्वामी अलक्ष्यानन्द साधु समाज में चर्चित व्यक्तित्व रहे हैं, उनकी दाहिनी आंख की पुतली के कोने में दक्षिणावर्ती पारद गणपति का विग्रह हर समय विद्यमान रहता है, पूजा काल में आंख की कोर से इस गणपति-विग्रह को निकाल कर पूजा साधना सम्पन्न करते हैं, और फिर पुनः आंख की कोर में स्थापित कर देते हैं।

पिछले दिनों स्वामी जी कृपा कर पत्रिका-कार्यालय में पधारे थे, वहीं उन्होंने इस प्रयोग को समझाया था, जो कि पाठकों के लिए उनके तरफ से वरदान स्वरूप है।

इस प्रयोग का प्रारम्भ अधिक मास अथवा चैत्र आषाढ़ अथवा किसी भी मास के बुधवार से करना चाहिए, गणपति की संगमरमर, स्वर्ण, चांदी, तांबे अथवा मंत्र सिद्ध "विजय गणपति" की स्थापना करे।

सर्व प्रथम निम्न प्रकार संकल्प करना चाहिए।

(अथाद्य अमुकवर्षे अमुकमासे शुक्लपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे मम अमुककामना सिद्धयर्थे लक्ष्मीप्राप्त्यर्थे श्रीचिंतामणिगणपतिदेवता-प्रीत्यर्थे श्रीचिंतामणिप्रयोग महं करिष्ये।

संकल्प करके गणपति की मूर्ति को सर्व प्रथम पंचामृत से तथा उसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराकर पट्टे पर पीला अथवा केशरिया रंग का वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर कुमकुम युक्त चावल का स्वस्तिक निर्मित कर उनके मध्य में चावल रखें, उसके ऊपर स्नान कराये हुए गणपति को स्थापित कर उन्हें चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप यज्ञोपवीत तथा पीत-वस्त्र से अलंकृत कर पुष्पहार पहनाएं, तत्पश्चात् उनके सम्मुख मोतीचूर (साबुत बूंदी के लड्डू) का नैवेद्य रजत-पात्र अथवा मिट्टी के पात्र में रख कर गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल चढ़ाएं, उसके बाद यह मन्त्र पढ़े–

[ॐ गणानां त्वा गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपति (गूं) हवामहे निघीनान्त्वा निधिपति (गूं) हवामहे व्वसोमम आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्]

इसके उपरांत निम्नलिखित मूल मंत्र का स्वर्ण, रजत अथवा कमल गट्टे या रुद्राक्ष की माला से ग्यारह हजार बार जप करे।

[ॐ ह्रीं श्रीचिन्तामणिगणपते वांछितार्थी पूरय पूरय लक्ष्मीदायक ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु सर्वसौख्य सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा श्रीं ह्रीं ॐ ।।]

जप की संख्या एवं समय एक समान रखना चाहिये, जहां तक सम्भव हो यह प्रयोग रात्रि के समय ही करना चाहिए, गणपति के सम्मुख रखे गये नैवेद्य को स्वयं ग्रहण करने के बाद बालकों तथा घर के अन्य व्यक्तियों को दे देना चाहिए।

जप के पश्चात् उसी स्थान पर अन्य बिछौना बिछाबिछाकर सोना चाहिये, सत्य बोलना चाहिये क्रोध नहीं करना चाहिये। जप के पश्चात् ही भोजन ग्रहण करना चाहिये, सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिये। मिर्च खटाई युक्त, खाना नहीं खाना चाहिये, यदि सम्भव हो तो स्वय ही खाना बना कर ग्रहण करना चाहिए, अथवा स्नान कर स्वच्छ धुले वस्त्रों को धारण कर जो खाना बनाए, उसके हाथों का बना खाना ग्रहण करना चाहिए।

जप के पश्चात् स्वयं ग्रहण करने के बाद बचा नैवेद्य भोजन के समय से पहले ग्रहण कर ले, तत्पश्चात् हो सके तो तिल, नारियल, शक्कर, घी से मंत्र का दशांश अर्थात् ११ माला का होम करना चाहिए, १२० मन्त्र से तर्पण, १२ मन्त्र से मार्जन तथा दो या अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।

यदि सामर्थ्य हो तो विद्वान आस्तिक सात्विक प्रवृत्ति वाले ब्राह्मण जैसे कहें वैसा करना चाहिए जप के पश्चात सदैव अपने घर में ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए और उसी के साथ स्वयं भी भोजन करना चाहिए जब तक यह प्रयोग चलता रहे, तब तक यजमान को सात्त्विक भोजन तथा ब्रह्मचर्य आदि का पालन करना चाहिए।

यह प्रयोग मनोवांछित कामना या सिद्धि के हेतु किया जा सकता है. धन की प्राप्ति हेतु चाहे जैसा संकट अथवा बाधा आई हो उस विघ्न से मुक्त होने, अथवा रोग मुक्त होने या मन की कोई भी इच्छा पूर्ण करने हेतु यह प्रयोग किया जाता है, जिस संकल्प की पूर्ति करनी हो, उसका पहले संकल्प बोलना चाहिए।

" विजय गणपति " की श्रेष्ठ धातु युक्त मूर्ति का स्थापन घर का सौभाग्य है, पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस अद्वितीय दुर्लभ " श्री चिन्तामणि विजय गणपति" को समय रहते प्राप्त कर किसी भी बुधवार से यह प्रयोग सम्पन्न करें, यह प्रयोग मात्र एक दिन का है।

जिज्ञासा

!! ¿?¿? ¿? ¿? ¿? ¿? ¿?!!

प्रश्न:- गुरु दीक्षा क्या जरूरी है ? गुरु दीक्षा के कितने रूप है ? जब सीखना ही है तो दीक्षा के बिना भी तो सीखा जा सकता है, दीक्षा के द्वारा गुरु एवं शिष्य के बीच कौन सा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है ?

—रजना शर्मा, कलकत्ता

उत्तर—सामान्य मानव के लिये, कुछ भी जरूरी नहीं है, परन्तु जब कोई साधक एक ऊंचे धरातल पर जाने की इच्छा करता है, जब वह पशु जीवन से सही शब्दों में मानव जीवन की ओर बढ़ना चाहता है, तब उसे एक ऐसे माध्यम की जरूरत पड़ती है, जो उसे समझा सके कि उसके लिए कौनसी साधना जरूरी है, उसका शरीर किस प्रकार की साधना के लिए उपयोगी है, किस प्रकार वह मन्त्र का उच्चारण करे, उसकी ध्वनि कैसी होनी चाहिए और मार्ग में आने वाली बाधाओं को किस प्रकार से दूर किया जा सकता है—ये सारे तथ्य गुरु, और केवल गुरु ही स्पष्ट कर सकता है। हर आदमी के लिए दो रास्ते नहीं है, एक आदमी के लिए एक ही रास्ता है, और जो गुरु है वह उस के 'माइल स्टोन' का काम करता है, वही रास्ता दिखाता है कि 'दिस इज द वे फोर यू' यही तुम्हारा रास्ता है, जिस प्रकार सांसरिक और यौन जीवन को सुदृढ़ बनाने के लिए शास्त्रों में विवाहित जीवन का आदेश है, उसी प्रकार आध्यात्मिकतया साधनात्मक जीवन को सुदृढ़ बनाने के लिए गुरु की, मार्गदर्शक की नितान्त आवश्यकता है।

प्रश्न:- गुरु शिष्य का संबंध कैसा होता है, और उसका प्रारम्भ कहां से होता है ?

राकेश चतुर्वेदी, वाराणसी

उत्तर:- गुरु शिष्य सम्बन्ध की शुरूआत लौकिक स्तर पर प्रारम्भ होती हैं, और इसकी परिणति होती हैं, आध्यात्मिक स्तर पर, साधनात्मक स्तर पर, पूर्णता के स्तर पर। गुरु निराकार तत्व है और शिष्य ऐसे गुरु तत्व पर अपनी भावनाओं को विचारों और इच्छाओं को समर्पित कर देना चाहता है, वह अपने जीवन में भटक न जाय इसलिये उसे गुरु की नितान्त आवश्यकता है। कबीर ने तो गुरु को 'खसम' कहा है, 'खसम' का तात्पर्य पति, और इस प्रकार से पति के चरणों में अपने आप को पूर्णता के साथ समर्पित करना ही शिष्यत्व है।

प्रश्न:- शिष्य का गुरु के प्रति क्या व्यावहारिक कर्त्तव्य होना चाहिए।

रंजना शर्मा, कलकत्ता

उत्तर:- शिष्य का गुरु के प्रति एक कर्त्तव्य है और इसी प्रकार गुरु का भी शिष्य के प्रति एक कर्त्तव्य हैं, शिष्य का मतलब है-अनुशासन और पूर्ण समर्पण; इसी प्रकार गुरु का भी तात्पर्य हैं 'गरिमा और शिष्य को आत्मसात करने की क्षमता'। दोनों के ही शब्दों के अर्थ स्पष्ट है और यही दोनों के कर्त्तव्य की ओर दिशा निर्देश करते है।

प्रश्न:- क्या गुरु इष्ट हो सकता है ?

—स्वामी ज्ञानरंजन, ऋषिकेश

उत्तर:- इष्ट का तात्पर्य एक ऐसी सत्ता से है जो उसके जीवन में सर्वोच्च है, और जिसमें लीन हो जाना वह अपना गौरव समझता हैं, यदि शिष्य की भावना हैं, तो वह गुरु को भी इष्ट मान सकता है, मेरी राय में यह स्थिति शिष्य की श्रेष्ठ एवं परम स्थिति है, ऐसी स्थिति

होने पर शिष्य तीर की तरह अपने दिव्य लक्ष्य की ओर दौड़ सकता है।

प्रश्न:- यदि पति और पत्नी दोनों एक ही गुरू से दीक्षा ले, तो क्या वे दोनों परस्पर भाई बहिन बन जायेंगे ?

–निरंजन कुमार, प्रयाग

उत्तर:- नहीं, भाई-बहिन और पति-पत्नी के बीच भावनात्मक फर्क कहां है ? दोनों में दो शरीर और दो मान्यताओं का ही तो फर्क है, स्त्री के साथ मैथुन का सम्बन्ध है, और बहिन के साथ स्नेह का। तात्विक दृष्टि से तो बहिन और पत्नी मात्र शरीर है, जो कुछ भी अंतर है, वह भावनाओं और मान्यताओं का ही तो है, मुसलमानों में चाचा की लड़की को पत्नी बनाया जाता है, जबकि हिन्दुओं में यह अधर्म है, इन दोनों में मान्यता का ही तो अन्तर आया है।

साधना के मार्ग में जब गुरू से दीक्षा ली जाती है, तो कोई सामाजिक सम्बन्ध कायम नहीं होता, बल्कि एक आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित होता है, आध्यात्मिक धरातल पर या साधनात्मक धरातल पर भाई-बहिन पति-पत्नी आदि कोई मूल्य नही रखते क्योकि आत्मा तो सब की एक ही है, अतः इस दृष्टि में बहिन तुम्हारी पत्नी है और फिर पत्नी तुम्हारी बहिन। इसलिए एक ही गुरू से दीक्षा लेने बाद भी सामाजिक धरातल पर दोनों पति-पत्नी है, पर आध्यात्मिक या साधनात्मक धरातल पर दोनों एक रूप ही है।

प्रश्न:- शिष्य की कसौटी इतनी कड़ी है तो क्या गुरू की कसौटी भी इतनी ही कड़ी होती है।

–रघुवीर सौंधु, रोहतक

उत्तर:- जो आज गुरू है वह इससे पहले अवश्य ही शिष्य रहा होगा, और उसे इतनी ही कड़ी परीक्षा से अवश्य ही गुजरना पड़ा होगा, इसलिये गुरू की कसौटी में ही शिष्य की कसौटी सन्निहित है, जो शिष्य कसौटी से घबरा जाता है, वह आगे चलकर भी क्या कर सकेगा, उसे इसी मल-मूत्र में भोग और वासना में पडे रहने देना चाहिए, उसके लिए यह रास्ता है ही नहीं। स्वर्णिम पथ पर वे ही चल सकते है, जिनमें कुछ कर गुजरने की क्षमता होती है, जिनकी आंखों में लपक होती है जिनके पांवों में मजबूती की क्षमता होती है, वे ही तो कुछ कर सकते है, और वे ही इस जीवन में 'फलक' को छू सकते है।

प्रश्न– क्या एक गुरु से दीक्षा प्राप्त शिष्य पुनः अन्य गुरू से दीक्षा प्राप्त कर सकता है ? क्या ऐसा करना पाप नही है ?

उत्तर- यदि हम ध्यान दें तो स्पष्ट होगा कि शिष्यता प्राप्त करने का उद्देश्य है शिष्य की पूर्णता प्राप्ति। जब तक शिष्य को पूर्णता प्राप्त नही होगी तब तक न तो गुरु का गुरुत्व ही पूर्ण कहलाएगा और न ही शिष्य का शिष्यत्व, अतएव मेरी राय में यदि शिष्य पूर्व गुरु के प्रति द्वेष भाव न रखते हुए यदि सात्विक भाव से किसी अन्य महापुरुष से दीक्षा प्राप्त करना है और अपने जीवन को आध्यात्मिक भौतिक पूर्णता की ओर गतिशील करता है तो इसमें कोई दोष नही हैं बल्कि यह समय की मांग हैं कि शिष्य को इसी जीवन में पूर्णता प्राप्त करना ही है।

स्वयं भगवान श्री राम ने वशिष्ठ जी का शिष्य होते हुए भी विश्वामित्र जी की शिष्य के रूप में सेवा की, और दिव्य ज्ञान प्राप्त किया, श्री कृष्ण जी ने भी संदीपन के बाद परमहंस योगीराज गुणातीतानन्द जी से दीक्षा प्राप्त की और सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त किया।

गुरू : शिष्य

गुरू कुम्हार शिष कुम्भ है, गढि गढि काढ़े खोट ।
भितरि भीतरि सहजि के बाहिर बाहिर चोट ॥

– कबीर

पारद शिवलिंग

पारद शिवलिंग संसार का एक अद्वितीय और देवताओं की ओर से मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है। संसार में बहुत कुछ प्राप्य है और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, परन्तु मन्त्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त रससिद्ध पारे से निर्मित पारद शिवलिंग प्राप्त होना सौभाग्य का ही सूचक है, इसके दर्शन से पूर्व जन्म के पाप क्षय हो जाते है तथा सौभाग्य का उदय होने लगता है।

सामान्यत: पारद का शोधन अत्यन्त कठिन कार्य है और इसे ठोस बनाने के लिए मूर्च्छित खेचरित कीलित, शम्भू विजित और शोधित जैसी कठिन प्रक्रियाओं में से गुजरना पड़ता है, तब जाकर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है और उससे शिवलिंग निर्माण सम्पन्न होता है।

शिवलिंग निर्माण के बाद ही कई मांत्रिक क्रियाओं से गुजरने पर पारद शिवलिंग रससिद्ध एवं चैतन्य हो पाता है. जिससे वह पूर्ण सक्षम एव प्रभावयुक्त बनता है, इसी लिए तो कहा गया है कि जिसके घर में पारद शिवलिंग है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिए ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को स्थापित कर लेता है।

संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते है कि वे व्यक्ति जो पारद शिवलिंग की पूजा करते है, उनके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। पारद शिवलिंग के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख–सुविधाएं प्राप्त होती है, वहीं उसे जीवन में मोक्ष प्राप्ति भी निश्चित रूप से सुलभ रहती है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरूदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी ने कहा है कि 'जो साधक पारद शिवलिंग अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उनके दर्शन ही करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धनधान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है।'

मैंने पिछले दस वर्षों में इस प्रकार के रससिद्ध पारे को ठोस बनाकर कई शिवलिंग बनाये है और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये है, वे सभी आज अच्छे स्तर पर है और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर है। साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त हुई हैं, वह उनके स्वयं के लिए भी चकित कर देने वाली है।

नीचे मैं कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों के विवरण दे रहा हूं जिससे स्पष्ट होता है कि पारद-शिवलिंग कितना अधिक महत्वपूर्ण है।

योगसिखोपनिषद्

रसलिंगं महालिंगं शिवशक्ति निकेतनम् ।
लिंग शिवालय प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदोहिनाम् ।

अर्थात् रसलिंग ही महालिंग है और इसे ही शिव शक्ति का घर या शिवालय कह सकते है। इसके प्राप्ति से ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

सर्वदर्शनसंग्रह

अभ्रकं तव बीजं तु मम बीजं तु पारदः ।
बद्धो पारद लिंगो यं मृत्यु दारिद्रय नाशनम्ः ।

अर्थात् भगवान शंकर स्वयं भगवती से कहते है कि पारद को ठोस कर लिंगाकार स्वरूप देकर जो पूजन करता है, उसे जीवन में मृत्यु-भय व्याप्त नहीं होता और किसी भी हालत में उसके घर में दरिद्रता नहीं आ पाती।

रसरत्नसमुच्चय

विधाय रसलिंगंयो भक्तियुक्तः समर्चयेत् ।
जगत्त्रितयालिंगानां पूजाफलमवाप्नुयात् ।।

अर्थात् जो भक्ति के साथ पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंग की पूजा का फल प्राप्त होता है तथा उसके समस्त महापाप नष्ट हो जाते है।

रसार्णव-तन्त्र

धर्मार्थकाममोक्षाख्या पुरुषार्थश्चतुर्विधा ।
सिध्यन्ति नात्र सन्देह रसराज प्रसादतः ।।

अर्थात् जो व्यक्ति पारद शिवलिंग की एक बार भी पूजा कर लेता है, उसे इस जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है।

स्वयम्भू लिंग सहस्रैर्यत्फल सम्यगर्चनात् ।
तत्फलंकोटिगुणित रसलिंगार्चनाद्‌भवेत ।।

अर्थात् हजारों प्रसिद्ध लिंगों की पूजा से जो फल मिलता है, उससे करोड़ गुना फल पारद निर्मित शिवलिंग की पूजा से सहज में ही प्राप्त हो जाता है।

शिव निर्णय रत्नाकार

मदः कोटिगुणं स्वर्ण, स्वर्णात्कोटि गुण मणिः ।
मणेः कोटिगुण बाणो, बाणात्कोटिगुण रसः ।
रसाततपरतरं लिंग, न भूता न भविष्यति ।।

अर्थात् मिट्टी या पत्थर से करोड़ गुना अधिक फल स्वर्ण निर्मित शिवलिंग के पूजन से मिलता है। स्वर्ण से करोड़ गुना अधिक मणि और मणि से करोड़ गुना अधिक फल बाणलिंग नर्मदेश्वर के पूजन से प्राप्त होता है। नर्मदेश्वर बाणलिंग से भी करोड़ गुना अधिक पारद शिव-लिंग के पूजन या दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है।

रस मार्तण्ड

लिंग कोटि सहस्त्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात् ।
तत्फल कोटिगुणित रसलिंगार्चनाद् भवेत्,
ब्रह्महत्यासहस्त्राणि गोहत्याशतानि च ।
तत्क्षणाद्विलयं यान्ति रसलिंगस्य दर्शनात्,
स्पर्शनाप्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम् ।।

अर्थात् हजारों-करोड़ों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है, हजारों ब्रह्म-हत्याओं और सैकड़ों गो-हत्याओं का किया हुआ पाप भी पारद शिवलिंग के दर्शन करते ही दूर हो जाता है। स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है, यह स्वयं भगवान शिव का कथन है।

ब्रह्मपुराण

धन्यास्ते पुरुषा लोके येऽर्चयन्ति रसेश्वरम् ।
सर्वपापहरं देवं सर्वकामफलप्रदम् ।।
ब्राह्मणः क्षत्रियाः वैश्यास्त्रियः शूद्रान्त्यजादयः
सम्पूज्य तं सुरवयं प्राप्नुवन्ति परां गतिम् ।।

अर्थात् संसार में वे मनुष्य धन्य है, जो समस्त मनोवांछित फलों को देने वाले पारद शिवलिंग का पूजन करते हैं। इसका पूजन ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र, स्त्री या अन्त्यज कोई भी करके पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता हुआ परम गति को प्राप्त कर सकता है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण

पच्यते कालसूत्रेण यावच्चन्द्रदिवाकरी ।
कृत्वालिंग सकृत् पूज्य वसेत्कल्पषतां दिवि ।।
प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्रबांधववान्स्तथा ।
ज्ञानवान् मुक्तिवान् साधुः रस लिंगार्चनाद् भवेत् ।

अर्थात जो एक बार भी पारद शिवलिंग का विधि-विधान से पूजन कर लेता है, वह जब तक सूर्य और चन्द्र रहते हैं, तब तक पूर्ण सुख प्राप्त करता है, उसके जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, पुत्र, पौत्र विद्या आदि में कोई कमी नहीं रहती और अन्त में वह निश्चय ही गुरु पद को प्राप्त होता है।

शिव पुराण

गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भ्रूणहापिया ।
शरणागतघाती च मित्र विश्रम्भघातकः ।।
दुष्टपापसमाचारी मातृपितृप्रहापि वा ।
अर्चनात् रस लिंगेन तत्तत्पात् प्रमुच्यते ।।

अर्थात गौ हत्यारा, कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला तथा माता-पिता का घातक भी यदि पारद शिवलिंग की पूजा करता है, तो वह तुरन्त सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

वायवीय संहिता

आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वांछितम् ।
रसलिंगार्चनादिष्टं सर्वतं लभते नरः ।।

अर्थात आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा जो भी मनोवांछित वस्तुएं हैं, सबको पारद शिवलिंग की पूजा से सहज में प्राप्त किया जा सकता है।

पारद शिवलिंग आर्द्रतारहित, निश्चल, छिन्नपक्ष रहित, श्वेतलिंगाकार होना चाहिए और ऐसा शिवलिंग शास्त्रसम्मत होना आवश्यक है, क्योंकि शिवलिंग और उसके आधार का एक निश्चित परिमाण है, यह कार्य केवल "विजय-काल" में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके बाद श्रेष्ठ मुहूर्त में पारद शिवलिंग को मुद्रा बन्ध, अर्चन, प्राण-प्रतिष्ठा, मन्त्रसिद्ध, रससिद्ध करना चाहिए. ऐसा होने के बाद संजीवनी मुद्रा मन्त्र से उसे प्रभावपूर्ण बनाना चाहिए, ऐसा होने पर ही पारद शिवलिंग दुर्लभ शिवलिंग बनता है।

शास्त्रों के अनुसार पारद शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, मेरे जीवन में ऐसे हजारों अनुभव हैं, कि शिवलिंग के पूजन से उन लोगों ने उन असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर दिखाया है, जो उनके लिए सम्भव नहीं थे।

जिसके घर में पारद शिवलिंग होता है, वह घर तीर्थ के समान माना जाता है. और उसमें रहने वाले के समस्त कार्य सुविधापूर्वक सम्पन्न होते रहते हैं, ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण भोग भोगते देखे गये हैं, वास्तव में जिसके तप, ज्ञान द्वारा पाप क्षीण होते हैं, उनको ही पारद शिवलिंग के पूजा का सौभाग्य प्राप्त होता है।

मेरे स्वयं के आधार पर मैं यह घोषणा करने में सक्षम हूं, कि पारद शिवलिंग अपने आप में दुर्लभ शिवलिंग है, बिना प्रसिद्ध योगी या गुरू के इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त नहीं हो पाता और भाग्य से ही रससिद्ध पारद शिवलिंग घर में स्थापित हो पाता है।

२३ फरवरी ९० को महाशिवरात्रि है, इससे पूर्व ही पारदेश्वर शिवलिंग प्राप्त कर स्थापित कर देना ही जीवन की पूर्णता है, ऐसे अवसर पर पत्रिका कार्यालय ने मात्र ऐसे तीस शिवलिंग मंत्र सिद्ध तैयार किये है, अतः जिनकी मांग पहले आयेगी उन्हे ही इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त हो सकेगा। ★

पुत्रदा एकादशी

क्या आप

पुत्र चाहते हैं

आज विज्ञान ने भले ही चिकित्सा के क्षेत्र में ऊंची छलांग लगा ली हो, पर फिर भी बांझ स्त्री को पुत्र देने में वह समर्थ नहीं हो सकी है, और संतान प्राप्ति के लिए ऐसे माता पिता कुछ भी करने के लिए तैयार है, चाहे वह उपाय कितना ही ज्यादा खर्चीला क्यों न हो ।

पर अब साधनात्मक ज्ञान के माध्यम से उनकी समस्या का समाधान हो सकता है, अन्धेरे में उन्हें आशा और विश्वास की नयी किरण देखने को मिल रही है ।

भारतवर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में "बांझ" शब्द अत्यन्त कष्टदायक और दुखःदायी माना जाता है, स्त्री की पूर्णता तभी भली प्रकार से सार्थक होती है, जब वह अपनी कोख से सुन्दर शिशु को जन्म दें ।

पर जब ऐसा नहीं होता, जब वे चिकित्सा के अच्छे से अच्छे उपाय करने के बावजूद भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, तो वे निराश और हताश हो जाते है, उनके लिए यह सारा संसार अन्धेरे में डूबा हुआ सा प्रतीत होता है . उन्हें अपना जीवन भार स्वरूप लगने लगता है और उनके मन में कुंठाएं व्याप्त हो जाती है जिसकी वजह से वे चिड़चिड़े, बीमार, और झल्लाने वाले स्त्री पुरुष बन जाते है।

और उनका समाधान चिकित्सा विज्ञान करने में असमर्थ रहा है, यद्यपि नई से नई औषधियां बन रही है, यद्यपि कृत्रिम गर्भाधान होने लगा है. परन्तु इसमें मातृत्व प्राप्त नहीं हो पाता. मां को जो अपनी कोख से उत्पन्न बच्चे के प्रति ममत्व, स्नेह और अपनत्व अनुभव होता है, वह नहीं हो पाता, और फिर ये सब प्रणालियां अत्यन्त खर्चीली एवं कष्टदायक भी है।

परन्तु इसका समाधान विज्ञान के पास भले ही न हो, साधना क्षेत्र में है, बम्बई के श्री जेठमल सोगानी की पत्नी ने संतान प्राप्ति के लिए एक नहीं , पचासों उपाय किये. डाक्टरों की सलाह के अनुसार उसने हारमोन्स के इन्जेक्शन लिये, शल्य चिकित्सा करवाई, कृत्रिम शुक्र संचन प्रणाली अपनाई परन्तु इसके बाद भी वह पुत्र उत्पन्न करने में सफल न हो सकी, और इन सब उपायों और प्रणालियों पर ६० हजार से भी ज्यादा खर्च कर चुके, कई वर्षों की परेशानियां और पीड़ा झेलने के बाद उन्होंने 'पुत्रदा प्रयोग" अपनाया और पहली बार भले ही उन्हें सफलता नहीं मिली, दूसरी बार फिर इस प्रयोग को सम्पन्न किया, तो उन्हें गर्भ रह गया और ठीक समय पर श्रेष्ठ पुत्र को जन्म दे कर यह सिद्ध कर दिया कि आज भी साधनात्मक क्षेत्र अपने आपमें परिपूर्ण है, आवश्यकता है उसको भली प्रकार से समझने की, तथा उसका उपयोग करने की।

भारतवर्ष में इससे संबंधित जो सर्वेक्षण किया गया है उसके अनुसार लगभग दो करोड़ स्त्री पुरुष बांझ के अभिशाप से ग्रस्त है, इन्होंने सभी प्रकार के उपाय किये है और यदि हिसाब लगाया जाय तो इन सब ने मिल कर अरबों रुपये बांझपन मिटाने के लिए व्यय कर डाले, पर इसके बावजूद भी उन्हें सफलता नहीं मिल पाई।

अब हजारों दम्पत्ति इस प्रश्न पर भी विचार करने लगे है, कि क्या चिकित्सा के पास इसके लिए कोई प्रामाणिक उपाय है भी या नहीं। क्या जो उपाय किये जा रहे है, उनसे सफलता मिल सकती है या नहीं, और फिर क्या इसके लिए इतना अधिक व्यय करना समझदारी है, जबकि इसके बावजूद भी सफलता नहीं मिल पाती।

शास्त्रों में इसके लिए उपाय है, मैं नहीं कह सकता कि यह अपने आपमें परिपक्व और पूर्ण उपाय है, परन्तु इस उपाय में किसी प्रकार की हानि नहीं है, इस उपाय में किसी प्रकार का अतिरिक्त व्यय नहीं है और फिर इसके बावजूद इस उपाय में सफलता का प्रतिशत अन्य चिकित्सा प्रणालियों की अपेक्षा ज्यादा है।

ज्योतिष शास्त्र में तो वर्ष में एक दिन केवल "पुत्र प्राप्ति का दिन" ही निश्चित कर दिया है जिसे "पुत्रदा एकादशी" कहते है। प्रत्येक वर्ष की पौष शुक्ल एकादशी को 'पुत्रदा एकादशी' कहा जाता है, जो इस वर्ष अंग्रेजी तिथि के अनुसार ७-१-९० को सम्पन्न हो रही है।

यह प्रयोग सरल है, और इस प्रयोग को पति और पत्नी दोनों को एक साथ सम्पन्न करना चाहिए, पर यदि किसी कारणवश ऐसा संभव न हो सके तो पत्नी को यह प्रयोग आजमाना चाहिए।

पुत्रदा प्रयोग

आगे की पंक्तियों में मैं संतान प्राप्ति से संबंधित जो प्रयोग देने जा रहा हूं वह शास्त्र सम्मत है, और हजारों वर्षो से हमारे पूर्वज इस प्रयोग को आजमाते रहे है, तथा इस

प्रयोग के माध्यम से उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। आश्चर्य की बात यह है कि इस प्रयोग को जहां महर्षि च्यवन ने श्रेष्ठ प्रयोग बताया है तो आगे चल कर धनवन्तरी जैसे ऋषि ने भी इस प्रयोग को पूर्ण माना है। नागार्जुन ने अपनी संहिता में लिखा है, कि यह प्रयोग पुत्र प्राप्ति के लिए अपने आपमें बेजोड़ है।

यह प्रयोग जहां संतान प्राप्ति में सहायक है, वहीं दूसरी ओर यदि किसी को केवल कन्याएं ही प्राप्त हो रही हो तो पुत्र प्राप्ति के लिए भी इस प्रयोग को संपन्न किया जा सकता है। इसीलिए तो इसे "पुत्रदा प्रयोग" कहा गया है।

इस प्रयोग को प्रारम्भ करने से पूर्व एक दिन पहले जो स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहती है, वह स्नान कर अपने पति के साथ या अकेले पूर्ण विधि विधान के साथ घर के पूजा स्थान में बैठ कर गुरू पूजन सम्पन्न करे, और गुरू मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करे।

इसके बाद दोपहर को भगवान कृष्ण के बाल्य रूप का चित्र अपने पूजा स्थान में रख दें, और उसकी संक्षिप्त पूजा करे एवं कामना करे, कि मुझे भगवान कृष्ण की तरह ही श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति हो। इसके बाद इसी दिन निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करे।

मंत्र

देवकी सुतगोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणागति।।

यह सब कुछ एक दिन पहले किया जाना चाहिए, अर्थात् पुत्रदा एकादशी के एक दिन पहले दसमी को यह प्रयोग सम्पन्न करे और रात्रि को दोनों पति-पत्नी भूमि शयन करे, तथा सूर्यास्त के बाद शुद्ध घृत का दीपक लगा ले, जो सारी रात जलता रहे।

दूसरे दिन पुत्रदा एकादशी (७-१-९०) को प्रातः काल पति पत्नी दोनों या पत्नी स्नान कर अपने बालों को भली प्रकार से धो ले और बाल खुले रखें। इसके बाद वह प्रातः काल पूर्व की ओर मुंह कर भगवान सूर्य को दूब (दूर्वा) चढ़ा कर सात बार जल से अर्घ्य दें। लान में या बगीचे में जो छोटी छोटी घास उगती है, उसे दूर्वा या दूब कहते है. अर्घ्य देने का तात्पर्य लोटे में जल ले कर पूर्व की ओर मुंह कर थोड़ा थोड़ा जल भगवान सूर्य को सात बार चढ़ावे और फिर जहां जल गिरा हो उसकी सात बार प्रदक्षिणा करे तथा सूर्य से प्रार्थना करे कि वह शरीर में तेजस्विता, एवं शुक्रता प्रदान करे, जिससे कि वह गर्भवती हो कर सूर्य के समान ही तेजस्वी बालक उत्पन्न करने में सक्षम हो सके।

इसके बाद पति पत्नी दोनों पूजा स्थान में बैठ जाय पत्नी सफेद साड़ी एवं सफेद वस्त्र ही पहिने तथा पुरुष भी सफेद धोती पहिन कर अपने दाहिनी ओर पत्नी को बिठा कर गुरूदेव के चित्र या उनकी मूर्ति का भली प्रकार से पूजन करे।

इसके बाद कांसी की थाली (कांसी एक धातु होती है और इसकी छोटी या बड़ी थाली बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाती है) में कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे, और उस पर "पुत्रदा यंत्र" को स्थापित करे।

यह यंत्र इस पूरी साधना में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, जो कि पूर्ण रूप से मंत्र सिद्ध और च्यवन संहिता के अनुसार सिद्ध किया हुआ हो।

इसे जल से तथा फिर दूध, दही घी, शहद, और शक्कर से स्नान करा कर शुद्ध जल से धो कर उस जल को अलग पात्र में ले ले, और थाली को पौंछ कर पुनः थाली में स्वस्तिक का चिन्ह बनावे तथा चावल की ढेरी बना कर उस पर यंत्र को स्थापित करें।

इसके बाद स्त्री यंत्र को धोये हुए जल को दूध में मिला कर रसोई घर में खीर बनावे खीर का तात्पर्य दूध को उबाल कर उसमें चावल डाल कर पकाने पर जो पकवान बनता है, उसे खीर कहते है, उसे कटोरे में ले कर पुनः पूजा स्थान में आकर इस यंत्र के सामने रख दे।

इसके बाद यंत्र की भली प्रकार से पूजा करे, केसर का तिलक करे, और उससे प्रार्थना करे कि वह श्रेष्ठ पुत्र प्रदान करने में समर्थ हो।

इसके बाद निम्न मंत्र को १०८ बार उच्चारण करे प्रत्येक उच्चारण के साथ थोड़े थोड़े चावल यंत्र पर पति पत्नी या केवल पत्नी डाले, चावल डालते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करे।

पुत्रदा मंत्र

।। ॐ हरिवंशाय पुत्रान् देहि देहि नमः ।।

जब इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण हो जाय तब यंत्र को पुष्प चढ़ावे और यंत्र को भगवान हरिवंश का अवतार मानकर उसके सामने खीर का भोग लगावे, तथा यंत्र पर जो चावल चढ़ाये हुए है, उनमें से दो चार दाने खीर में डाल दें, दो चार दाने स्वयं तथा दो चार दाने पति चबा ले।

इसके बाद भगवान हरिवंश अर्थात् जो सामने यंत्र रखा हुआ, उसके सामने जो खीर का भोग लगाया हुआ है, उस खीर को दोनों पति पत्नी बांट कर वहीं पर बैठे बैठे चम्मच के माध्यम से खा ले और फिर बाहर जा कर हाथ धो कर मुंह साफ करे और पूजा स्थान में बैठ जाय।

इसके बाद किसी लाल धागे में या चैन में "पुत्रदा यंत्र" को पिरो कर वह यंत्र पति स्वयं अपनी पत्नी के गले में पहिना दे, तथा सामने रखे हुए भगवान श्री कृष्ण के बाल रूप के चित्र को भक्ति भाव से प्रणाम करे, इसके बाद आसन से उठ जाय।

इस बात पूरा ध्यान रखे कि इसके पहले दिन जो घी का दीपक जलाया था वह आज पुत्रदा एकादशी के दिन और पूरी रात अखण्ड रूप से जलता रहे। फिर पुत्रदा एकादशी की रात्रि को पति प्रसन्न चित्त हो कर अपनी पत्नी के साथ समागम करे, इस प्रकार यह पुत्रदा प्रयोग सम्पन्न होता है।

इसके बाद पुत्रदा एकादशी के दूसरे दिन किसी आठ से दस साल के छोटे बालक को घर पर बुला कर उसे भोजन करावे, और यथाशक्ति वस्त्र या भेंट प्रदान करे यदि संभव हो तो किसी ब्राह्मण को भी दक्षिणा दे या मन्दिर में जा कर नैवेद्य आदि भगवान के सामने समर्पित कर दे।

इस प्रकार यह पुत्रदा प्रयोग सम्पन्न होता है, यदि स्त्री के लिए सुविधाजनक हो, तो पीछे जो पुत्रदा मंत्र दिया हुआ है, उस मंत्र की एक माला नित्य "पुत्रजीवा" माला से मंत्र जप करे। इस प्रयोग में पुत्र जीवा माला का ही प्रयोग किया जाता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इस प्रयोग की सफलता से कई दम्पतियों को अनुकूलता लाभ और सफलता प्राप्त हुई है।

ऐसा अवसर वर्ष में एक बार ही आता है, यदि इस अवसर को चूक जाते है तो पुनः अगले वर्ष ही इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। साधक स्वयं तो यह प्रयोग सम्पन्न करे ही, अपने आस पड़ोस या किसी परिचित के घर में पुत्र न हो तो उसे भी यह प्रयोग समझा कर पुण्य लाभ अर्जित करे।

यह प्रयोग केवल पुत्र प्राप्ति के लिए ही नहीं अपितु यदि घर में पुत्र हो तो आज्ञाकारी पुत्र होने, पुत्र की दीर्घायु, पुत्र के स्वास्थ्य लाभ और पुत्र के विवाह अथवा पुत्र के व्यापार वृद्धि के लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

卐

साधना का अनुपम पर्व

मकर संक्रांति

१४-१-९०

मकर संक्रांति का साधना के क्षेत्र में अद्वितीय महत्व है क्योंकि यह एक ऐसा समय है, जब सूर्य उस कोण पर आ जाता है, जहां से वह अपनी पूर्ण तेजस्विता मानव की देह में उतार सकता है।

मनुष्य शरीर विभिन्न प्रकार के राग-द्वेष, छल-कपट आदि से भरा हुआ है, हमसे जाने-अनजाने निरन्तर गलतियां होती ही रहती है, और फलस्वरूप उन दोषों के समावेश से हमें साधना में सफलता भी नहीं मिल पाती इसीलिए सिद्धाश्रम ने यह व्यवस्था की है, कि किसी भी प्रकार की साधना को यदि मकर संक्रांति के अवसर पर सम्पन्न की जाय, तो निश्चय ही इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

मकर संक्रांति के दिन ही भगवती लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ जब लक्ष्मी की उत्पति देवासुर संग्राम के अवसर पर समुद्र मंथन के द्वारा हुई, तब वह कन्या थी और इसीलिए जिस स्थान पर समुद्र मंथन हुआ, जिस स्थान पर समुद्र के गर्भ से लक्ष्मी की उत्पति हुई, उस स्थान को आज भी 'कन्या-कुमारी'' कहते है, जो भारतवर्ष के दक्षिणी छोर पर है। यह एक ऐसा स्थान है, जहां तीन समुद्र एक साथ मिलते है, और यही पर कन्या कुमारी का पवित्र और श्रेष्ठ मन्दिर है। हजारों लाखों लोग प्रति वर्ष भारतवर्ष के दक्षिण में कन्या कुमारी स्थान पर जाते है. और उसकी प्राकृतिक छटा देखते है, समुद्र का परस्पर मिलन और तीन समुद्रों का संगम देखते है, जहां का सूर्योदय विश्व प्रसिद्ध है, जो भी कन्याकुमारी जाता है, वह प्रातःकाल उठ कर छत पर खडे होकर सूर्योदय को देखने की अभिलाषा मन में अवश्य रखता है, क्योंकि कन्या कुमारी का सूर्योदय अपने आपमें अन्यतम है, ऐसा लगता हैं कि जैसे समुद्र में से धीरे धीरे स्वर्ण कलश बाहर निकल रहा हो, ठीक वैसा ही सोने की तरह चमचमाता हुआ कलश, जिसमें अमृत और तेजस्विता भरी हुई है, चारों तरफ अगाध समुद्र हैं, जहां तक दृष्टि जाती है, समुद्र की लहरें ही लहरें दिखाई देती है, और उन लहरों के बीच जब सूर्य बाहर निकलता है, तो अपने आपमें एक अद्भुत और अनिवर्चनीय दृश्य दिखाई देता है।

परन्तु जिस दिन समुद्र मंथन के उपरान्त चौदह रत्न निकले, उन चौदह रत्नों में लक्ष्मी भी एक रत्न थी, मगर वह कन्या थी, अविवाहित थी, कुंवारी थी और इसी के प्रतीक स्वरूप उस स्थान पर कन्याकुमारी मन्दिर का निर्माण किया गया, एक पवित्र भूमि का आविर्भाव हुआ और आज भी श्रद्धालु लोग उस कुंवारी लक्ष्मी के विग्रह को देखने के लिए हजारों हजारों लोग जाते है।

परन्तु इसके कुछ ही समय बाद भगवान विष्णु अवतरित हुए, और उस समुद्र के किनारे ही लक्ष्मी को पत्नी रूप में स्वीकार किया, और यही समय मकर संक्रांति पर्व कहलाता है, जब कुंवारी कन्या का पाणि-

ग्रहण भगवान विष्णु के साथ होता है, इसीलिए इस दिन का विशेष महत्व है, इसीलिए इस दिन भगवती लक्ष्मी से संबधित आराधना और प्रयोग सम्पन्न किये जाते है और शास्त्रों में यह प्रामाणिकता के साथ कहा गया है, कि यदि मकर संक्रांति के दिन भगवती लक्ष्मी की उपासना की जाती है, तो निश्चय ही उसे लक्ष्मी प्राप्ति होती है, चाहे उसे विधि विधान की जानकारी हो या न हो, परन्तु यदि वह इस दिन का प्रयोग सम्पन्न करता है, और यदि इस दिन सिंहवाहिनी कमलधारिणी लक्ष्मी की साधना सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही उसकी जन्म जन्म की दरिद्रता समाप्त होती है, उसके दुर्भाग्य का अन्त होता है, और उसके घर में पूर्ण रूप से लक्ष्मी का निवास होता है।

आपने लक्ष्मी के बारे में तो बहुत कुछ पढ़ा होगा, परन्तु पहली बार सिंहवाहिनी लक्ष्मी के बारे में पढ़ रहे होंगे। सिंहवाहिनी तो दुर्गा है, लक्ष्मी सिंहवाहिनी कैसे हो सकती है, परन्तु लक्ष्मी उपनिषद में स्वयं लक्ष्मी ने स्पष्ट किया है कि यदि मेरे पाणिग्रहण दिवस अर्थात् मकर संक्रांति के अवसर पर पूर्ण रूप से मेरे सिंहवाहिनी रूप का चिन्तन करता है, और कमलधारिणी स्वरूप का पूजन करता है, तो निश्चय ही मैं उसके घर में स्थायी निवास करती हूं क्योंकि सिंह समस्त दुर्भिक्ष अभाव और दुर्भाग्य को समाप्त करने वाला है, रोग, दोष, और पापों को भक्षण करने वाला हैं, आलस्य और जीवन की न्यूनताओं को भगाने वाला है, इसीलिए मेरे सिंहवाहिनी स्वरूप का चिन्तन और मनन पूर्णता का प्रतीक है।

सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यंत्र

लक्ष्मी उपनिषद में भार्गव ऋषि ने लक्ष्मी के इस महत्वपूर्ण यंत्र की परिभाषा और निर्माण की क्रिया पूर्णता के साथ समझाई है, उनका कहना है कि ऐसा महायंत्र निर्माण करना ही कठिन है, क्योंकि इस महायंत्र का निर्माण केवल लक्ष्मी काल में ही सम्पन्न किया जाना चाहिए। दिन रात के चौबीस घण्टों में थोड़े थोड़े समय के अन्तराल से लक्ष्मी-क्षण आते रहते हैं, उन क्षणों में ही इस यंत्र का निर्माण होना चाहिए और सिंहवाहिनी कमल धारिणी महालक्ष्मी का जाग्रत यंत्र यदि साधक के पास होता है, तो वास्तव में ही वह समस्त भू-सम्पदा का स्वामी होता है, केवल मात्र घर में यंत्र रखने से ही उसे धर्म, अर्थ काम, और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। यह यंत्र तो अन्धकार में प्रकाश की तरह है, मध्य रात्रि में सूर्य की तरह तेजस्वी है। भले ही साधना सम्पन्न हो या न हो, भले ही मंत्र जप हो न हो, पर यदि मकर संक्रांति के अवसर पर प्रातः काल साधक अपने घर में पूजा स्थान में इस अद्वितीय महायंत्र की स्थापना करता है, वह वास्तव में ही सौभाग्यशाली माना जाता है, वास्तव में ही उसके घर में देवता निवास करते है, वास्तव में ही उसके घर में लक्ष्मी को आना ही पड़ता है, और जब तक वह महायंत्र घर में स्थापित होता है, तब तक उस घर में लक्ष्मी का निवास बराबर बना रहता है।

ऐसा महायंत्र घर में स्थापित होने पर कर्ज, मिट जाता है, घर के लड़ाई झगड़े समाप्त हो जाते है, व्यापार वृद्धि होने लगती है, आर्थिक उन्नति और राज्य में सम्मान प्राप्ति होती है, और उसके जन्म जन्म के दुःख और पाप समाप्त हो जाते हैं।

वास्तव में ही इस महायंत्र की जितनी प्रशंसा इस उपनिषद में की है, और आगे के ऋषियों ने इस महायंत्र की जितनी विशेषताएं बतलाई है, वे अपने आपमें अन्यतम है, वशिष्ठ, विश्वामित्र, आदि ऋषियों ने इस प्रकार के महायंत्र को "कामधेनु" की संज्ञा दी है। गौतम और कणाद जैसे ऋषियों ने इस महायंत्र को "कल्पवृक्ष" के समान फलदायक बताया है। शंकराचार्य ने स्वयं इस महायन्त्र को स्थापित कर, इससे संबंधित मंत्र जप के द्वारा असीम लक्ष्मी भण्डार प्राप्त कर जीवन की पूर्णता प्राप्त की थी। स्वयं महागुरू गोरखनाथ ने स्वीकार किया है, कि इस यंत्र में तांत्रिक और मांत्रिक दोनों विधियों का पूर्ण रूप से समावेश हैं। यह महायंत्र अपने

आप में ही देवताओं के समान फलदायक है। आगे के विद्वानों ने भी यह स्वीकार किया है कि भले ही हम साधना सम्पन्न न कर सके, भले ही हम मंत्र जप न कर सके, भले ही हमें विधि विधान का ज्ञान न हो, परन्तु हमारे पास हमारे घर में ऐसा महायंत्र स्थापित है, तो फिर हमारे जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं रह सकती, फिर हमारे जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं रह सकता, फिर हमारे जीवन में न्यूनता और असफलता नहीं रह सकती।

वास्तव में ही साधकों को चाहिए, कि वे समय रहते ही इस प्रकार के महायंत्र की रचना कर दे, या ऐसे महायंत्र को प्राप्त कर ठीक समय पर इसे स्थापित कर दें। अन्यथा पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करने पर ईस प्रकार का महायंत्र सुलभ करने की व्यवस्था की जा सकती है।

साधना प्रयोग

यद्यपि शास्त्रों में बताया गया है, कि ऐसा महायंत्र स्थापित होने के बाद इससे संबंधित किसी भी प्रकार की साधना करनी अनिवार्य नहीं है परन्तु यदि साधक चाहते हो, यदि साधकों की इच्छा हो तो वे इससे संबधित प्रयोग सम्पन्न कर सकते है, जिसे मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं।

यह एक दिन का प्रयोग है, और साधक चाहे तो प्रातः काल या रात्रि को यह साधना सम्पन्न कर सकते है।

सबसे पहले साधक मकर संक्रांति के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाय और सामने एक लकड़ी के तख्ते पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर इस महायंत्र को स्थापित कर दे। इससे पहले अलग पात्र में इस महायंत्र को जल से तथा दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर से स्नान कर पुनः शुद्ध जल से धोकर पोंछ कर इसे रेशमी वस्त्र पर स्थापित कर दे, और केसर से इस महायंत्र पर नौ बिन्दियां लगाये जो नव निधि की प्रतीक है।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करे।

विनियोग

अस्य श्री महालक्ष्मी हृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, आद्यादि श्री महालक्ष्मी देवता, अनुष्टुपादिनानाछन्दांसि, श्री बीजम् ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम् श्री महालक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक मकर संक्रांति पर्व पर भगवती लक्ष्मी को नवनिधियों के साथ अपने घर में स्थापित करने के लिए प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दे, और फिर यंत्र के सामने शुद्ध घृत के पांच दीपक लगावे, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे, और दूध के बने हुए प्रसाद का नैवेद्य समर्पित करे, इसके बाद हाथ जोड़ कर ध्यान करें।

ध्यान

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया।
हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवी विचिन्तये॥

इसके बाद साधक लक्ष्मी माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करे, इसमें 'लक्ष्मी माला' का ही प्रयोग होता है।

महामंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यं सिंहवाहिन्यै स्वाहा।

इसके बाद साधक लक्ष्मी की आरती करे और यंत्र को अपनी तिजोरी में रख दे या पूजा स्थान में रहने दे तथा प्रसाद को घर के सभी सदस्यों में वितरित करदे, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है जो कि इस वर्ष की श्रेष्ठतम और अद्वितीय साधना कही जाती है। ★

सम्पूर्ण जीवन का संतुलन

शाकम्भरी साधना प्रयोग

जीवन जीना कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, जीवन तो प्रत्येक मनुष्य जी लेता है, ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से पशु अपना जीवन जी लेते हैं, भूख प्यास नींद, कामवासना, संतान उत्पति और मृत्यु, ये सब क्रिया कलाप तो पशु भी करते है और मनुष्य को भी करने पड़ते है, इन दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

अन्तर इतना ही है, कि मनुष्य चाहे तो अपने जीवन का प्लानिंग कर सकता है, अपने जीवन को संतुलित बनाने के लिए योजना बना सकता है, अपने बिगड़ते हुए जीवन को व्यवस्थित कर सकता है, और अपने जीवन को उन उंचाइयों पर पहुंचा सकता है, जहां मानव का स्वप्न है।

संतुलित जीवन

संतुलित जीवन की कोई बंधी बंधाई परिभाषा नहीं है, शास्त्रों में यह बताया गया है, कि जिससे भी जीवन सुखमय हो सके, जिससे भी जीवन में आनन्द प्राप्त हो सके, और जिससे जीवन में पूर्णता आ सके, वह संतुलित जीवन है। फिर भी योग वशिष्ठ ने संतुलित जीवन के चौदह सूत्र बताये है और जो इन चौदह सूत्रों को परिपूर्ण नहीं कर पाता, उसका जीवन अधूरा और अपूर्ण कहलाता है।

अपूर्ण जीवन अपने आपमें अकाल मृत्यु है, क्योंकि

उसे फिर मल मूत्र भरी जिन्दगी में आना पड़ता है, इस जीवन में यदि व्यक्ति चाहे, तो अपने जीवन को साधना के द्वारा पूर्णता दे सकता है, अपने जीवन में जो न्यूनताए है, जो कमिया है, उनको परिपूर्ण कर सकता है, और ऐसे ही संतुलित जीवन की कामना हमारे ऋषियों ने की है।

योग वशिष्ठ के अनुसार संतुलित जीवन के निम्न चौदह सूत्र है–

१– सुन्दर रोग रहित स्वस्थ देह।

२– पूर्ण आयु प्राप्ति।

३– मन में प्रसन्नता और आनन्द का अतिरेक।

४– सफल और पूर्ण गृहस्थ जीवन।

५– सौभाग्यशाली और उन्नति करने वाले पुत्र पुत्रियां।

६– आनन्ददायक मनोहारिणी सुन्दर स्वभाव वाली पत्नी।

७– शत्रु रहित सम्पूर्ण जीवन।

८– राज्य में सम्मान और निरन्तर उन्नति।

९– निरन्तर व्यापार वृद्धि और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता।

१०– तीर्थ यात्राए व्रत, उद्यापन, मन्दिर निर्माण और सामाजिक कार्य।

११– शुभ एवं श्रेष्ठ कार्यो में व्यय।

१२– वृद्धता का निवारण और चिरकालीन यौवन प्राप्ति।

१३– अपने जीवन में गुरू और इष्ट से साक्षात्कार।

१४– मृत्यु के उपरान्त सद्गति और पूर्ण मोक्ष प्राप्ति।

उपरोक्त एक दो नहीं अपितु पूरे के पूरे चौदह सूत्र यदि जीवन पर लागू होते है, तो वह संतुलित जीवन है। यदि इनमें से कुछ भी न्यूनता है, यदि इनमें से कोई एक बिन्दु भी कमजोर है, तो वह सम्पूर्ण जीवन संतुलित जीवन नहीं कहा जा सकता।

इसीलिए सिद्धाश्रम ने वर्ष में एक दिन मनुष्य के लिए यह अवसर दिया है कि वह पूर्ण संतुलित जीवन प्राप्त करें, उसके जीवन में यदि अब तक कोई भी न्यूनता रही हो, यदि उसके जीवन में किसी भी प्रकार का असंतुलन रहा हो तो इस दिन के प्रयोग से वह असमानता और असंगति निश्चित रूप से दूर हो जाती है और वह थोडे ही दिन में संतुलित जीवन प्राप्त कर लेता है, ऐसे ही प्रयोग को "शाकम्भरी प्रयोग" कहा गया है।

मार्कण्डेय पुराण में ऋषि ने भगवती दुर्गा की साधना करते हुए कहा है, कि तुम सही रूप में शाकम्भरी बन कर मेरे जीवन में आओ, जिससे कि मैं अपने जीवन मे सभी दृष्टियों से पूर्ण संतुलन प्राप्त कर सकूं, मेरा जीवन पुत्र पौत्र धन-धान्य, यश समृद्धि से परिपूर्ण हो और किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे।

ऋषि ने दुर्गा सप्तशती में जहां शाकम्भरी देवी का वर्णन किया है, वहां स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि भले ही मैं भगवती दुर्गा के अन्य रूपों का स्मरण न करू भले ही मुझे आराधना, साधना या पूजन विधि का ज्ञान न हो, भले ही मैं पवित्रता के साथ मंत्र उच्चारण न कर सकूं, परन्तु मेरे जीवन पर भगवती शाकम्भरी सदैव ही पूर्ण कृपा दृष्टि बनाये रखें, जिससे कि मैं इस जीवन में ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों पुरूषार्थो की प्राप्ति करता हुआ समाज में सम्मान और यश अर्जित करता हुआ पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकूं।

वास्तव में ही यह 'शाकम्भरी दिवस' प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है, क्योंकि जब हम अपने जीवन पर दृष्टि डालते है तो जीवन में कई न्यूनताए एवं असंगतियां दिखाई देती है, पुत्र का आज्ञाकारी

न होना, पति पत्नी में कलह, विविध प्रकार के रोग, मानसिक तनाव, बन्धु बान्धवों मे विरोध, निरन्तर शत्रु भय, अचानक आने वाली राज्य बाधाएं आदि ऐसी सैकड़ों समस्याएं है, जिनसे हमें निरन्तर झूंझना पड़ता है, हमारी शक्ति का बहुत बड़ा हिस्सा इस प्रकार की समस्याओं के निराकरण में और झूंझने में व्यतीत हो जाता है, हम अपने जीवन में जो कुछ नया करना चाहते जो कुछ सृजन करना चाहते है, वह नहीं कर पाते, और एक प्रकार से देखा जाय तो सारा जीवन हाय-तौबा उखाड़ पछाड़, आशा निराशा और विविध प्रकार के रोगों से लड़ने तथा मानसिक संताप में ही व्यतीत हो जाता है।

उनके लिए यह शाकम्भरी दिवस एक वरदान की तरह है, जीवन की एक अमूल्य पूंजी है, जो इस अवसर का उपयोग नहीं कर पाता, वह वर्ष का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर चूक जाता है, वह जीवन के सौभाग्य से वंचित रह जाता है, वह जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा खो देता है।

इसीलिए सिद्धाश्रम ने और हमारे ऋषियों ने इस महत्वपूर्ण अवसर के दिवस पर शाकम्भरी प्रयोग सिद्ध करने की सलाह दी है, जिससे कि हमारा जीवन संतुलित रह सके, यों तो यह वर्ष मे किसी भी शुक्रवार को संपन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि शाकम्भरी जयन्ती के अवसर पर इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही पूर्ण अनुकूलता और सुख प्राप्त होता है, निश्चय ही हमारे जीवन मे जो कमियां है, वे दूर हो पाती है, और हम सभी दृष्टियों से सफलता के पथ पर अग्रसर हो सकते है।

यह प्रयोग एक चैलेन्ज है, आज के युग में भी इस साधना का प्रभाव तुरन्त देखा जा सकता है, कई बार तो अनुभव में यह आया है, कि हम ज्यों ही प्रयोग सम्पन्न करते है, त्यों ही जीवन में अनुकूलता प्रारम्भ होने लगती है और जीवन की जो कुछ न्यूनताएं है, जीवन की जो कुछ कमियां है, वे अपने आप ठीक होने लगती है। वास्तव में ही यह प्रयोग मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप है।

शाकम्भरी प्रयोग

साधक इस दिन प्रातःकाल उठ कर स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो पीली साड़ी और पीली कंचुकी पहिने और अपने बालों को धो कर पीठ पर फैला दे। फिर पूजा स्थान में या पवित्र स्थान पर बैठ जाय और सामने एक लकड़ी का बाजोट रख कर उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा दें, और उस पर अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण "शाकम्भरी महायंत्र" को स्थापित करे।

शास्त्रों में "शाकम्भरी यंत्र" को बनाने की विशेष विधि बताई है, सामान्य रूप से इस प्रकार के यंत्र का प्रारम्भ पूर्व भाग से प्रारम्भ हो कर दक्षिण, पश्चिम और उत्तर भाग से होता हुआ सम्पन्न हो, साथ ही साथ इसमें जितनी रेखाएं अंकित है, उन रेखाओं को प्रामाणिकता के साथ अंकन करें।

इसके बाद जो शाकम्भरी यंत्र रहस्य को जानता हो, उसे चाहिए कि वह १०८ महादेवियों की स्थापना विशेष विधान के साथ उस यंत्र में स्थापित करें, जिससे कि यह यत्र सभी दृष्टियों से पूर्ण सौभाग्यशाली बन सके, तत्पश्चात् इसमें मार्कण्डेय ऋषि प्रणीत प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न करे, और यंत्र के सामने पुष्प तथा नैवेद्य समर्पित करे, साथ ही इस यंत्र के पीछे भगवती शाकम्भरी देवी का चित्र सुन्दर फ्रेम में मढ़वा कर स्थापित करे और उसकी संक्षिप्त पूजा करें।

इतना करने के बाद साधक हाथ जोड़ कर निम्न पंक्तियों का २१ बार उच्चारण करे, जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शाकम्भरी रहस्य

सिद्धिद ऋद्धि दात्री च सदा सिद्धिनिषेवरणी
मालता माल्य युक्ता च दुर्गा दुर्गति नाशिनी ।।
बुद्धिदा बुद्धि-दात्री च सदा संकट-नाशिनी ।
जननी लोक-माता च कुलज्ञा कुल-पालिनी ।।
दया रूपा हृदिस्था च पूज्या च कुल पूजनी ।
सदाराध्या सदाध्येया सदा संकट-नाशिनी ।।
माया-रूपा स्वरूपा च भक्तानुग्रह कारिणी ।
कुलार्चिका महा-देवी देवांना सुख दायिनी ।।
सर्व-स्वरूपा सर्वा च सर्वेषां सुखदा मता ।
कल्याणि कल्प-रूपा च कल्याणी सेविता सदा ।।

श्रद्धापूर्वक उपरोक्त पक्तियों का २१ बार पाठ करें इसे "शाकम्भरी रहस्य" बताया गया है जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये मात्र पंक्तियां नहीं है, अपितु प्रत्येक पंक्ति अपने आप में मंत्र है, प्रत्येक पंक्ति का अपने आपमें प्रभाव है। अतः साधक को चाहिए कि वह इन पंक्तियों का २१ बार उच्चारण करे।

इसके बाद "मरगज माला" से शाकम्भरी मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करे। यह शाकम्भरी मंत्र जीवन का श्रेष्ठतम मत्र और प्रभावशाली मंत्र कहा गया है। अनुभव में यह आया है, कि साधक को मंत्र जप समाप्त होते होते अनुकूल फल की उपलब्धि होने लगती है, और वह जीवन में जो भी चाहता है वह प्राप्त हो जाता हैं।

मन्त्र जप से पूर्व साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं आज शाकम्भरी अवसर के दिवस पर शाकम्भरी की पूजा करता हुआ, भगवती शाकम्भरी के यंत्र को अपने घर में स्थापित करता हुआ, भगवती शाकम्भरी को अपने शरीर में समाहित करता हुआ, निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मंत्र जप सम्पन्न कर रहा हूँ और हाथ में जल लिये लिये ही साधक जो भी इच्छाएं हो, साधक के जीवन की जो भी न्यूनताएं हों, और साधक अपने जीवन में जो भी चाहता हो, उसका उल्लेख कर दें। और फिर वह हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दे।

इसके बाद निम्न शाकम्भरी मन्त्र की ११ माला मंत्र जप करे, जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूं कि इसमें 'मरगज माला' का ही प्रयोग किया जाता है, और मंत्र जप के बाद साधक को यह माला गले में धारण करनी चाहिए अथवा जीवन में जब भी बाधा नजर आ रही हो, जब भी कोई परेशानी हो, तब घण्टे दो घण्टे के लिए यदि यह माला गले में धारण कर ली जाती है, तो वह तनाव वह बाधा अपने आप दूर होने लगती है, या उसका कोई न कोई रास्ता प्राप्त हो जाता है।

शाकम्भरी महामंत्र

ॐ ऐं क्लीं शाकम्भरी महादेव्यै क्लीं क्लीं ऐं फट्

मंत्र जप के बाद यदि साधक को स्मरण हो, तो किसी दुर्गा या भगवती की आरती सम्पन्न करे, और जो शाकम्भरी देवी के चित्र के सामने भोग लगाया हुआ है वह भोग परिवार में वितरित कर दें।

इसके बाद किसी थाली या हवन कुण्ड में लकड़ियां जला कर शुद्ध घृत से उपरोक्त मंत्र की १०८ आहुतियां दे। यज्ञ समाप्ति के बाद किसी कुंवारी कन्या को अपने घर पर बुला कर उसे भोजन करावे, और यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि दे।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है, वास्तव में ही देखा जाय तो यह प्रयोग अत्यन्त सरल हैं, मुझे तो आश्चर्य होता है, कि जब हमारे पास इतनी श्रेष्ठ साधना है, तो फिर साधक क्यों परेशान और दुःखी रहते है, तो फिर साधक के जीवन में क्यों न्यूनताएं रहती है। तो फिर साधक क्यों मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता हैं ?

मुझे विश्वास है, कि पत्रिका का प्रत्येक पाठक इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करेगा, यही नहीं अपितु अपने परिचितों, और मित्रों और संबंधियों को भी इस प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा।

आप

समस्त संसार को सम्मोहित कर सकते हैं

षोडशी साधना के द्वारा

२४-१-९०

षोडसी त्रिपुर सुन्दरी दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या है। जो कि वशीकरण और सम्मोहन विद्या की अद्वितीय सिद्धिदात्री है, देवताओं ने षोडसी साधना करके अपने स्वरूप को अद्वितीय सम्मोहित और सौन्दर्ययुक्त बना लिया था।

अगली पंक्तियों में मैं योगी गोपीनन्द जी के द्वारा प्रणीत तांत्रोक्त षोडसी साधना रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि किसी भी ग्रन्थ में पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

सिद्धाश्रम ने माघ कृष्ण १३ को "षोडसी त्रिपुर सुन्दरी सिद्धि दिवस" माना है, जो कि अंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष २४-१-९० को सम्पन्न हो रहा है। यद्यपि षोडसी साधना के कई प्रकार है और सैकड़ों ग्रन्थों में षोडसी साधना की विधियां प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत की है।

परन्तु इस क्षेत्र में अन्यतम आचार्य, योगीराज गोपीनन्द जी है, जिन्होंने सिद्धाश्रम प्रणीत तांत्रोक्त रूप से षोडसी साधना सम्पन्न कर एक नवीन विधा को विश्व के सामने रखा है।

षोडसी शब्द क्यों ?

भारतवर्ष के अधिकतर साधकों और गृहस्थ शिष्यों ने षोडसी दीक्षा प्राप्त की है, यद्यपि इसके दो भेद है, लघु षोडसी और वृहद् षोडसी परन्तु, वृहद षोडसी के द्वारा जीवन में परिपूर्णता और समृद्धि स्वाभाविक है।

भगवद् पाद शंकराचार्य ने वृहद षोडसी दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही अपनी विजय यात्रा प्रारम्भ की थी। उनके गुरू ने स्पष्ट रूप से शंकराचार्य को बताया था, कि यदि जीवन में विजय प्राप्त करनी है, यदि जीवन में सर्वश्रेष्ठ बनना है,

और यदि जीवन में करोड़ों लोगों के दिलों पर शासन करना है तो साधक को षोडसी साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए। इसके सोलह अक्षर अपने आपमें सोलह मंत्रों का संयुक्त स्वरूप है. और जो इन सोलह मंत्रों या सोलह अक्षरों के माध्यम से यह साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

वृहच्चय संहिता में षोडसी के सोलह अक्षरों का विन्यास पूर्णता के साथ किया है, और प्रत्येक अक्षर की विशेषता को भली प्रकार से स्पष्ट किया हैं कि यदि साधक चाहे तो षोडसी के प्रत्येक अक्षर की साधना कर सकता है, और वह चाहे तो पूरे सोलह अक्षरों से संबंधित मंत्र की साधना सम्पन्न कर सकता है।

योगी राज गोपीनन्दजी ने भी इसके प्रत्येक अक्षर की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है कि मानव जीवन की पूर्णता के लिए षोडसी साधना जीवन की अद्वितीय साधना है, मैं इसके प्रत्येक अक्षर का विन्यास वृहच्चय सहिता के अनुसार स्पष्ट कर रहा हूँ।

मंत्र विन्यास

१- ह्रीं : शरीर की पुष्टता और तेजस्विता प्राप्ति।

२- क : समस्त संसार में पूर्ण विजय प्राप्त करने की दिव्यता।

३- ए : समस्त शरीर को सुन्दर आकर्षण और सम्मोहन प्राप्ति के लिए।

४- ई : विश्व के प्रत्येक स्त्री पुरुष को पूर्ण रूप से अपने अधीन बनाने और उस पर सम्मोहन करने का प्रतीक।

५- ल : सभी विद्याओं में पूर्ण पारंगतता और कवित्व प्राप्ति के लिए।

६- ह्रीं : सुन्दर एवं यौवनवती स्त्रियों में सभी दृष्टियों से पूर्ण लोकप्रिय होने के लिए।

७- ह : सम्पूर्ण रूप से रोग रहित पूर्ण यौवन प्राप्ति के लिए।

८- स : दीर्घायु और अंतिम क्षण तक वेगवान एवं यौवनवान बने रहने के के लिए।

९- क : ससार के किसी भी स्त्री या पुरुष को तत्क्षण सम्मोहित करने के लिए।

१०- ह : अतुलनीय धन, वैभव और सुख प्राप्ति के लिए।

११- ल : समस्त प्रकार से पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए।

१२- ह्रीं : अद्वितीय यश सम्मान कीर्ति एव प्रसिद्धि प्राप्ति का प्रतीक।

१३- स : स्त्री साधिका हो तो हमेशा सोलह वर्ष की यौवनवती बने रहने के लिए और पुरुष साधक हो तो अद्वितीय यौवनवान बनने के लिए।

१४- क : समस्त प्रकार की विद्याओं और साधनाओं में सिद्धि प्राप्ति के लिए।

१५- ल : बलवान, स्वस्थ और समस्त विश्व का, और विश्व के प्रत्येक स्त्री पुरुष का तत्क्षण अपने अनुकूल बनाने के लिए।

१६- ह्रीं : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की पूण प्राप्ति के लिए।

इस प्रकार हम देखते है, कि षोडसी मंत्र केवल एक मंत्र ही नहीं है, अपितु इसका प्रत्येक अक्षर अपने आपमें मंत्र राज है। यदि इसके प्रत्येक अक्षर की साधना संपन्न की जाय तभी साधक को उससे संबंधित पूर्ण सफलता

और सिद्धि प्राप्त होती है परन्तु यदि कोई साधक पूरे सोलह अक्षरों के साथ साधना सम्पन्न कर लेता है, तो फिर उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

ऐसे साधक की वृद्धता और शारीरिक क्षीणता अपने आप समाप्त हो जाती है वह पूर्ण रूप से यौवनवान बन जाता है और उसके चेहरे पर एक ऐसा तेज आ जाता है, कि वह संसार के किसी भी पुरुष या किसी भी स्त्री को एक ही क्षण में अपने वश में कर सकता है और जीवन भर उसे अपनी आज्ञा के अनुसार संचालित कर सकता है।

कहते है, कि भगवान श्री कृष्ण ने बचपन से ही इस साधना को सम्पन्न कर लिया था, और उनके चेहरे को देखने पर भगवान शिव ने स्वयं कहा था कि 'श्री कृष्ण के चेहरे पर तो षोडशी स्वयं सम्पूर्ण बीज मंत्रों के साथ बैठी हुई है,' इसलिए यदि श्री कृष्ण मनुष्य तो क्या पशु पक्षी जड़ और चेतन को भी अपने वश में कर दे तो अति-षयोक्ति नहीं है।

वास्तव में ही यह साधना सम्पूर्ण रूप से आकर्षण और वशीकरण साधना है, यदि स्त्री साधिका इस साधना को सम्पन्न कर लेती है, तो वह जीवन भर सोलह वर्ष की युवती के समान सुन्दर और आकर्षक बनी रहती है, तथा उसके चेहरे पर एक ऐसा भोलापन एक ऐसा आकर्षण बनता है जो किसी को भी अपनी ओर खीचने में समर्थ हो पाता है।

इसी लिए तो संसार के समस्त योगियों और ऋषियों ने षोडसी साधना को जीवन की अपूर्व और अद्वितीय साधना कहा है। इसके माध्यम से जीवन के समस्त भोग और ऐश्वर्य तो प्राप्त होते ही है, साथ ही साथ वह स्वयं इतना यौवन और आकर्षण सम्मोहन और वेग प्राप्त कर लेता है, कि उसके लिए जीवन में कुछ भी असंभव नहीं होता।

इसीलिए सिद्धाश्रम ने इस महत्वपूर्ण दिवस को सर्वाधिक महत्व दिया है और सिद्धाश्रम का प्रत्येक योगी इस दिन की प्रतीक्षा करता रहता है, जबकि वह पूर्ण विधि विधान के साथ इस साधना को सम्पन्न करे, यही नहीं, अपितु भारत वर्ष के हजारों लाखों साधक इस साधना को सम्पन्न करते है, और अपने क्षेत्र में अद्वितीय रूप से लोकप्रिय हो कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करते है।

योगीराज गोपीनन्दजी ने सिद्धाश्रम में प्रचलित षोडसी साधना को कृपा पूर्वक हमें देने का अनुग्रह किया है, जो कि इस षोडसी साधना का श्रेष्ठतम स्वरूप है। इस प्रकार से साधना करने पर निश्चय ही पूर्ण सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है। यह साधना का श्रेष्ठतम स्वरूप है।

साधना रहस्य

यह साधना सरल है, और कोई भी साधक पुरूष या स्त्रीं इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, यो तो इस साधना को वर्ष में कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि "षोडसी दिवस" के अवसर पर यह साधना सम्पन्न की जाय तो उसे आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त होती है। यह एक दिन की साधना है, जिसे मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं।

इस साधना में "तांत्रोक्त षोडसी महायंत्र" का विशेष महत्व है अगर यों कहा जाय कि इस साधना का आधार ही यह महायंत्र है, जो कि विशेष रूप से अंकित होता है, इसका प्रत्येक पंक्ति अपने आपमें विशेष प्रभाव युक्त होनी चाहिये। इसकी प्रत्येक पक्ति अपने आपमें विशेष प्रभाव युक्त होती हैं। यह महायंत्र सिद्धाश्रम नियमों के अनुसार मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए इसके अलावा इस महायंत्र का चक्रेश्वरी पारायण के अनुसार प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए, न्यास एवं वाग्देवता प्रयोग से सम्पुटित होना चाहिए, साथ ही साथ इसमें द्वादश कलाओं की स्थापना कर इसे पूर्ण रूप से प्रभावयुक्त बनाना चाहिए।

इस यंत्र को बनाना और फिर इसे मंत्र सिद्ध करना अत्यधिक कठिन माना गया है, इसलिए साधक को चाहिए कि वह इस दिवस से बहुत पहले ही इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त कर ले, जिससे कि समय रहते इस पर प्रयोग सम्पन्न किया जा सके।

षोडसी सिद्धि दिवस के अवसर पर रात्रि को साधक स्नान कर पीली रेशमी वस्त्र धोती की तरह पहिने और पीले आसन पर पूर्व या उतर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय। सामने किसी लकड़ी के तख्ते पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर इस महायंत्र को पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और फिर इसकी संक्षिप्त पूजा करे।

इसके बाद साधक इस महायंत्र के सामने चावल की सोलह ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक एक शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करे, दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए, फिर साधक पूर्ण निष्ठा के साथ 'षोडशी महा माला" से निम्न का मंत्र का जप रात्रि में सम्पन्न करे। रात्रि का प्रारम्भ सूर्यास्त से दूसरे दिन सूर्योदय तक माना जाता है और इसमें केवल षोडसी माला का ही प्रयोग किया जा सकता हैं जो तांत्रोक्त रूप से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त हो।

फिर साधक इसी माला से निम्न मंत्र की १०८ माला सम्पन्न करे, यह सारी क्रिया और मंत्र जप एक ही रात्रि में सम्पन्न हो जाता चाहिए।

षोडसी महायंत्र

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब साधक इस महायंत्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद चढावे और फिर उस प्रसाद का सेवन वही पर बैठे बैठे स्वयं कर ले, इस प्रसाद को वितरित नहीं किया जा सकता, और न घर के सदस्यों को ही दिया जा सकता है।

इसके बाद मुंह धो कर साधक इस माला को गले में धारण कर ले और यदि भगवती दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उस आरती को सम्पन्न करे।

इस प्रकार से यह प्रयोग सम्पन्न होता है, सम्पन्न होने के बाद इस महायंत्र को अपने पूजा स्थान में पूर्ण श्रद्धा और सम्मान के साथ स्थापित करना चाहिए और इस सुन्दर अद्वितीय माला को अपने गले में धारण कर ले, माला का स्पर्श शरीर से होते रहना चाहिए, जिससे कि शरीर चैतन्यतायुक्त और यौवनयुक्त बना रहे।

साधक स्वयं इस साधना को सम्पन्न करने के कुछ ही दिनों में आश्चर्यजनक अन्तर अनुभव करेगे, वह यह अनुभव करेगा कि वास्तव में ही उसके चेहरे में कुछ ऐसा आकर्षण या सम्मोहन आ गया है जिससे कि जो भी उससे मिलता है वह उसमे प्रभावित होने लगता है, वह चाहे अधिकारी मंत्री हो, शत्रु हो, पुरूष या कोई भी स्त्री हो।

यथासंभव उस माला को साधक गले में धारण किये रहे, और जब भी उसे अनुकूलता मिले, तो वह उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप कर ले, यद्यपि अनिवार्य नहीं है।

इस प्रकार का महायंत्र आप कहीं मे भी प्राप्त कर सकते है, पत्रिका तो हमेशा साधकों का ही हित सम्पादन करती है, अतः बहुत ही कम ऐसे महायंत्र तैयार करवाने की व्यवस्था हो रही है, यदि साधक चाहें तो इस प्रकार का महायंत्र समय रहते प्राप्त कर सकते है।

इस साधना की सफलता और श्रेयता की सूचना समय समय पर पत्रिका कार्यालय को अवश्य दे।

अपनों से अपनी बात

हमें अत्यन्त प्रसन्नता है, कि पत्रिका में दी गई साधनाओं से अनेक साधकों को पूर्ण सफलताएं मिली है, यह उनके नित्य आने वाले पत्रों से स्पष्ट है, और इसके माध्यम से उन्होने जो लाभ अर्जित किये है, वे वास्तव में ही अन्धेरे में प्रकाश की तरह हैं, और यह एक बार फिर पूर्ण रूप से प्रमाणित हो गया है, कि पत्रिकाओं में दी गई साधनाएं यदि पूर्ण विधि और श्रद्धा के साथ सामग्री और निर्देशों के साथ सम्पन्न की जाय, तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है ।

इसमें हम कुछ श्रेष्ठ साधनाएं दे रहे है, और इनमें से प्रत्येक साधना का अपना महत्व है, इससे संबंधित जो सामग्री हम दे रहे है, वे श्रेष्ठ पंडितों से मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त है, ...फलस्वरूप उसके माध्यम से साधनाओं में सफलता मिलने की संभावनाएं बढ़ गई है ।

और फिर कम से कम मूल्य में इसलिए, कि आप साधनाओं में रूचि ले सके, साधनाए सम्पन्न कर सकें, और जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकें ।

धनराशि मत भेजिए

आप चिन्ता न करे, आप केवल प्रपत्र भर कर हमें भेज दें, हम वी.पी. से आपको साधना सामग्री भिजवा देगे, अग्रिम धनराशि भेजने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमें आप पर और केवल आप पर पूरा पूरा भरोसा है ।

स्वर्ण रेखा साधना प्रयोग

मैं इस बार अवश्य ही अपने जीवन के दुःख, अपने जीवन की दरिद्रता और भय को मिटाने में इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहता हूं, क्योंकि यह इस वर्ष की अद्वितीय भेंट है।

मैं १९८९ के लिए पत्रिका का सदस्य बना रहा हूं, कृपया आप १०५)रु. की वी.पी. से मुझे स्वर्ण रेखा साधना से सम्बन्धित यंत्र भिजवा दें, मैंने पत्रिका शुल्क अपने मित्र से प्राप्त कर लिया है, इस प्रकार मुझे कुछ भी व्यय नहीं करना पड़ रहा है।

वी.पी. आते ही मैं छुड़ाने का वायदा करता हूं जिससे कि मुझे यह यंत्र सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा, वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बना कर उसे पत्रिकाएं भेज दें।

१– मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

आप उपरोक्त दुर्लभ यंत्र मुझे मेरे निम्न पते पर भेजें—

१- मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या ....

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

मातंगी सिद्धि साधना

मुझे १-१-८९ को सम्पन्न होने वाली मातंगी सिद्ध साधना सम्पन्न करनी है।

मातंगी महायंत्र की न्यौछावर १९५)रु. है जिसमें 'मातंगी महायंत्र' और 'मातंगी माला' दोनों शामिल है। कृपया मुझे प्रामाणिक रूप से मातंगी महायंत्र और मातंगी माला भिजवा दें, मैं १९५)रु. तथा संबंधित डाक व्यय देकर वी.पी. छुड़ा लूंगा जिससे कि मुझे यह यंत्र सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

१– मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग

पृष्ठ १९ पर आपने उपरोक्त प्रयोग दिया है, जो इस महीने किसी भी बुधवार को सम्पन्न किया जा सकता है।

इससे संबंधित विजय गणपति की रियायती न्यौछावर १७७)रू. है।

कृपया प्रामाणिक विजय गणपति की श्रेष्ठ धातु युक्त मूर्ति को भिजवा दें, वी. पी. प्राप्त होते ही मैं छुड़ाने का वायदा करता हूं जिससे कि मैं इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकूं।

पारद शिवलिंग

२६ फरवरी १९८९

महाशिव रात्रि के अवसर पर पर मैं अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करना चाहता हूं, दस ग्राम के दुर्लभ महत्वपूर्ण पारद शिवलिंग की न्यौछावर १९५)रू. है जो कि रियायती न्यौछावर है।

यदि आप प्रामाणिक रूद्राक्ष माला चाहे तो उसकी न्यौछावर १८०) रू. अलग है।

मैं इस अवसर पर उपरोक्त दोनों वस्तुएं चाहता हूं, कृपया मुझे यह सामग्री वी.पी. से भिजवा दें जिससे कि आगे की कई पीढ़ियों तक यह दुर्लभ शिवलिंग मेरे घर में स्थापित रह सके, और मैं जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकूं। वी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ाने का वायदा करता हूं।

पुत्रदा एकादशी

७-१-१९९०

मैं इस प्रयोग के लिए "पुत्रदा यंत्र" चाहता हूं जो च्यवन संहिता के अनुसार सिद्ध किया हुआ हो, इस पर न्यौछावर १५०)रू. है।

"पुत्रजीवा माला" अपने आपमें दुर्लभ माला मानी गई है, जो इस प्रयोग में सहायक है,उस पर न्यौछावर मात्र ८०)रु. है।

कृपया आप उपरोक्त दोनों वस्तुएं मुझे वी.पी. से भिजवा दें, वी.पी. आने पर मैं छुड़ा लूंगा। कृपया आप भगवान श्री कृष्ण का बाल्यरूप चित्र भी मुफ्त में भेज दें।

साधना प्रयोग	पृष्ठ	न्यौछावर
सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यंत्र (मकर संक्रांति) १४-१-९०	३० से ३२	१२०)रु.
लक्ष्मी माला	३० से ३२	६०)रु.
(शाकम्भरी साधना प्रयोग) शाकम्भरी यंत्र १०-१-९०	३३ से ३६	१५०)रु.
मरगज माला	३३ से ३६	८०)रु,
षोडशी साधना— २४-१-९०		
तांत्रोक्त षोडसी त्रिपुर सुन्दरी महायंत्र	३७ से ४०	१६०)रु.
षोडशी माला	३७ से ४०	८०)रु.
भूत सिद्धि साधना	कवर का तीसरा पृष्ठ	१२०)रु.
भूत सिद्ध यंत्र		
कुण्डलिनी जागरण(नाभि-चक्र)	कवर का दूसरा पृष्ठ	६०)रु.

नोट:— कृपया इस प्रपत्र के अनुसार आप जो भी सामग्री चाहे उसके आगे सही का निशान लगाकर हमें भेज दें जिससे कि आपको संबंधित सामग्री भेजने में सुविधा रहे।

२— कृपया पत्रिका प्राप्त होते ही आप निर्णय कर ले और हमें लिख कर भेज दे जिससे कि समय पर आपको सामग्री प्राप्त हो सके।

३— प्रत्येक साधना प्रयोग के साथ आपका पता लिख कर अवश्य भेजे जिससे कि सही पते पर आपको सामग्री भेजी जा सके। यदि आपको पत्रिका सदस्यता संख्या ज्ञात हो तो उसे भी आप अवश्य लिखे।

४— कई बार हम आप पर विश्वास करके सामग्री भेज देते है, ओर आप घर पर नहीं होते और आपने घर के सदस्यों को सूचित नहीं किया हुआ होता तब वह पैकेट वापिस लौट आता है, ऐसी स्थिति में पत्रिका कार्यालय को व्यर्थ की हानि उठानी पड़ती है, कृपया आप जब घर के बाहिर जावें तब घर के सदस्यों को सूचित कर दे, जिससे कि वी.पी. प्राप्त होने पर वे छुड़वाले और आपको सामग्री सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जाय।

● मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका ही क्यों ?

○ क्योंकि इसके चार प्रमुख कारण हैं--

१- भारी छूट

इस महीने बनने वाले सदस्यों से मात्र ६६) ही लिये जा रहे हैं, पर अगले महीने से पत्रिका का वार्षिक शुल्क १०५) होने जा रहा है इस प्रकार अभी प्रपत्र भर कर भेजने में विशेष छूट मिल जायेगी।

२- पांच विशेषांक

इस वर्ष हम पांच विशेषांक निकालने जा रहे है....भारी भरकम....ज्यादा रंगीन पृष्ठ....ज्यादा सामग्री....और यह सब कुछ इसी वार्षिक शुल्क में।

३- आपकी पत्रिका : आपके घर पर

ऐसी अद्वितीय पत्रिका प्रतिमाह आपके घर पर पहुंचाने का हम वायदा करते है....हो सकता है कि पत्रिका का कोई अंक मार्ग में ही गुम जाय, या खो जाय....पर ऐसी स्थिति में हम आपसे वायदा करते है कि आपका पत्र प्राप्त होते ही वह अंक पुनः अपने खर्चे पर सर्वथा निःशुल्क आपको भेजने की व्यवस्था करेंगे।

४- पत्रिका अभी : शुल्क बाद में

आपको मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट भेजने की जरूरत नहीं है, आप आगे के पृष्ठ पर दिये हुए "सदस्यता प्रपत्र" को भर कर भेज दें, हम आपको वी. पी. से जनवरी ९० का विशेषांक भेज देते है, और आगे एक हर महीने पत्रिका का अंक आपके पास पहुंचाने के लिये वचन बद्ध है।

एक अद्वितीय पत्रिका

मंत्र·तंत्र·यंत्र

वि ज्ञा न

विशेष छूट व वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

हां ! मैं १६६० के लिये पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूं, अतः रियायत एवं छूट पाने का हकदार हूं।

आप ६६) वार्षिक शुल्क तथा डाक व्यय जोड़ कर जनवरी ६० का विशेषांक वी.पी. से भेज दें, पोस्टमेन के आने पर मै धनराशि देकर वी.पी. छुड़ाने का वायदा करता हूं।

हस्ताक्षर..........................

सदस्यता नं...........................

नाम..

पूरा पता..

....

संतुष्टि – प्रमाण पत्र

"मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान" पत्रिका का एक मात्र उद्देश्य आपकी खुशी और प्रसन्नता है, इस पत्रिका से आपको या आपके मित्र को पूरे वर्ष में कभी भी संतुष्टि अनुभव न हो तो वे अपनी सदस्यता समाप्त कर सकते है, और जो अंक उन्हें मिल गये है, उनका शुल्क काट कर शेष बकाया रकम हाथों हाथ देने का वायदा करते है, हमारी तरफ से पत्रिका सदस्यों की संतुष्टि की यह पूरी पूरी गारंटी है।

पत्रिका सदस्यता की इस छूट का लाभ यों उठाइये

० आप पीछे दिये हुए प्रपत्र को भली प्रकार से पढ़ कर स्याही से भर लें।

०० आप इसे हिन्दी या अंग्रेजी में ही भरे।

००० भरने के बाद इस प्रपत्र को फाड़ कर अलग कर लें, व लिफाफे में रख कर उस पर ६० पैसे का टिकट लगाकर ऊपर पता लिखें—

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी जोधपुर ३४२००१ (राज.)

०००० फिर इस प्रपत्र को आज ही भेज दें, अभी।

००००० हम आपको वार्षिक शुल्क ९६/- तथा डाक व्यय जोड़ कर जनवरी का विशेषांक भेज देंगे वी.पी. आने पर आप पोस्ट मेन को धनराशि देकर वी.पी. छुड़वा लें।

०००००० वी.पी. छुटने पर आपको वार्षिक सदस्यता शुल्क की रसीद व सदस्य संख्या भेज देंगे और प्रतिमाह नियमित रूप से अंक भेजने का वायदा करते है।

भूत सिद्धि साधना

२६-१-९०

इस बार माघ कृष्ण अमावस्या "शुक्रवारी" अमावस्या हैं और मकर राशि का चन्द्रमा इस दिन होने से यह चैतन्य दिन बन गया है। यदि इस प्रकार के अवसर पर भूत सिद्धि की जाय तो निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती ही है।

अन्य अवसरों पर भले ही इस प्रकार की साधना में सफलता या असफलता मिले पर इस मौनी अमावस्या के दिन यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही भूत सिद्धि होती है, और सफलता मिलती ही है, मुझे पिछले ही दिनों एक श्रेष्ठतम योगी से यह प्रयोग प्राप्त हुआ है और जिसे आजमा कर देखने पर सफलता प्राप्त हुई है। यों तो इस प्रयोग को किसी भी दिन किया जा सकता है, पर यदि शुक्रवारी अमावस्या की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती ही है।

और जब यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तो भूत साधक के वश में हो जाता है और साधक अपने जीवन में जो भी आज्ञा देता है, उस भूत को वह आज्ञा पालन करनी ही पड़ती है, भूत के माध्यम से वह किसी भी प्रकार की वस्तु, मिठाई, वस्त्र या पदार्थ कहीं से भी मंगवा सकता है, अपना संदेश कहीं पर भी भिजवा सकता है, दूसरों का संदेश प्राप्त कर सकता है, किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसके मन की बात जान सकता है, और किसी के भी भूतकाल को वह पहिचान सकता है, तथा भूत के माध्यम से जान सकता है। ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ भी गोपनीय नहीं रहता, यदि वह चाहे तो भूत के द्वारा धन, द्रव्य, और आभूषण भी प्राप्त कर सकता हैं।

वास्तव में ही इस मौनी अमावस्या के दिन यह प्रयोग डंके की चोट पर सफल होता है, इसलिए प्रत्येक साधक को इस दिन का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

मौनी अमावस्या अर्थात् २६-१-९० की रात्रि को साधक स्नान कर वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर बैठ जाय और वह काली धोती धारण करे, और काले आसन पर बैठे तो ज्यादा उचित रहता है, उसके बाद वह सामने लोहे के पात्र में "भूत यंत्र" को रख दें, और सामने पांच काली मिर्च और पांच लौंग रख दे। फिर तेल का दीपक लगा दे और "भूत माला" से इसी रात्रि को ५१ माला मंत्र जप कर ले, इसमें भूत माला का ही प्रयोग किया जाता हैं।

सिद्ध भूत मंत्र

।। ॐ क्रीं क्रीं भूत वश्यै क्रीं क्रीं फट् ।।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तो सामने भूत उपस्थित होने पर घबराये नहीं और उससे वचन ले ले कि यह जीवन भर साधक की आज्ञा का पालन करेगा, तब साधक अपनी साधना पूर्ण समझे और आसन से उठ जाय।

इसके बाद जब भी भूत को बुलाना चाहे तो उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करने पर भूत सामने निश्चय ही उपस्थित होता है और साधक उसे जो भी आज्ञा देता है, भूत बिना नु-नच किये आज्ञा का पालन करता ही है।

वास्तव में ही आज युग में भूत साधना के लिए यह श्रेष्ठ समय है, और यह सबसे सरल और प्रामाणिक प्रयोग है जिसे साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए।

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल. आर. जे. ३६६७/८६-८७

Scanned by CamScanner